भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 11 | **जुलाई** 2010 | **अंक** 7

जन्म दिवस पर विशेष

देवकी नंदन खत्री

बिहार के मुजफ्फरपुर के जिन देदीप्यमान नक्षत्रों ने हिन्दी के साहित्याकाश पर अपना प्रकाश बिखेरा, उनमें पहला नाम उपन्यासकार बाबू देवकी नंदन खत्री का है। 'चंद्रकांता' और 'चंद्रकांता संतति' जैसी लोकप्रिय उपन्यास शृंखला के रचयिता खत्रीजी का जन्म 18 जून 1861 को पूसा ग्राम स्थित उनके ननिहाल में हुआ था। उनके नाना, मामा जमींदार थे और उस जमाने के नामी रईसों में शुमार थे। देवकी बाबू का लालन-पालन व शिक्षा-दीक्षा ननिहाल में ही हुई। बाल्यावस्था से ही उनमें साहित्यकार वाली कल्पना शक्ति विकसित होने लगी थी। परिणामस्वरूप आगे चलकर देवकी नंदन खत्री ने भारतेंदुयुगीन उपन्यासकारों के सुधारवादी व शुष्क कथानक वाली लेखन शैली को नकारते हुए तिलस्मी ऐयारी उपन्यास की नई धारा का प्रवर्तन कर, इस विधा को रोचक बना दिया। इन रचनाओं के कारण लेखक का पाठकों से जीवंत और आत्मीय सम्पर्क बना तथा एक बड़े पाठक वर्ग ने खत्रीजी के उपन्यास को पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी। इस प्रकार खड़ी बोली के विकास के प्रारम्भिक दौर में तिलस्मी एवं रोमांचकारी शैली के एक दर्जन से अधिक उपन्यासों का लेखन कर खत्रीजी ने हिन्दी गद्य को स्थापित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

देवकी नंदन खत्री महफिलबाज और पतंगबाजी के शौकीन थे। मुजफ्फरपुर नगर के रईस खत्री परिवार के मुखिया बाबू महेश्वरप्रसाद खत्री से उनकी गहरी दोस्ती थी, जो स्वयं भी कवि-कोविदों और कलाकारों के बड़े कद्रदान थे। उनके यहाँ अक्सर देश के नामचीन सहित्यकारों और गायकों-नर्तकों की महफिल सजती तो उसमें देवकी नंदन भी शिद्दत से शामिल होते। वे उनके साथ पतंगबाजी का भी मजा लेते। महेश्वर बाबू की सलाह पर बाबू देवकी नंदन ने 1894 में मुजफ्परपुर में लहरी प्रेस की स्थापना कर 'उपन्यास लहरी' नामक साहित्यिक पत्रिका का मासिक प्रकाशन प्रारम्भ किया। उपन्यास लहरी को ही हिन्दी की पहली कथा-पत्रिका होने का गौरव प्राप्त है। इसके पूर्व भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के सम्पादन में क्रमश: 'कवि वचन सुधा' तथा 'हरिश्चन्द्र-चन्द्रिका' नामक पत्रिका प्रकाशित हो रही थी।

बाज़ार में नहीं मिलते संस्कार

शिक्षा की दुकानें सज चुकी हैं। बच्चों के स्कूल खुल रहे हैं लोक-लुभावन रंग-बिरेंगे। देशी-विदेशी कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में दाखिला लेने को बेताब हैं नौजवान। उच्च शिक्षा के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों की स्कॉलरशिप और बच्चों के लिए शैक्षिक-गुणवत्ता के विज्ञापनों से पटे पड़े हैं हिन्दी और अंग्रेजी के अखबार।

यह एक छोटा-सा चित्र है, श्वेतश्याम-रेखाचित्र मात्र। अब ज़रा कूची उठाईये और रंग भरने चलिये, एक-एक करके खुलती जायेंगी चित्र की परतें और साफ नज़र आने लगेंगी इस बहु-प्रचारित, बहु-उद्देशीय शिक्षा-योजना की हक़ीक़त। पिछले दौर में कठिन-साधना और तपस्या द्वारा अर्जित की जाती थी विद्या जिसका लक्ष्य था पुरुषार्थ-सिद्धि; आज भी विद्या-अर्जन और उसके लक्ष्य वही हैं केवल शब्द-भेद द्वारा मानक बदल दिये गये हैं। वस्तुत: आज के दौर में लुप्त हो चले हैं वे प्राथमिक-संस्कार जो विद्या और विद्या-प्रदाता के प्रति पूज्य-पूजन भाव विकसित करते थे। आज विद्या एक साधन है साध्य नहीं, स्कूल-विश्वविद्यालय विद्या-विक्रय के प्रतिष्ठान हैं और अध्यापक/आचार्य उसके कारिन्दे। बाज़ार के आभोग/उपभोग की ज़रूरतों और खरीद-बेंच के बीच भला कैसी पूज्य-पूजा?

दूसरी ओर राष्ट्रीय-स्तर पर प्रसारित शिक्षा-नीति के अनुरूप कई विभिन्न मानकों (Standards) को मान्यता प्राप्त है। केन्द्र और प्रान्त की सरकारों के अलग-अलग शैक्षणिक-बोर्ड हैं जो माध्यमिक (पूर्व/उत्तर) स्तर की परीक्षाओं का संचालन करते हैं, इनमें भी मानक-भेद हैं। इनके समानान्तर प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षण के लिए 'नवोदय-विद्यालय' गुरुकुल-मदरसा, कान्वेन्ट-स्कूल और अंग्रेजी माध्यम के निजी स्कूल हैं। इन विभिन्न मानकों के अलावा भी मानक हैं जो राष्ट्रीय-सामाजिक-संरचना के लिए वर्ग-भेद कारक तत्त्व हैं और यह भारतीय-समाज के सामंजस्य के लिए घातक है। हमारा समाज पहले ही वर्ण-वर्ग में विभाजित रहा है और यह शैक्षणिक मानक-भेद उस विभाजन की प्रवृत्ति को ही विकसित करेगा। इसलिए सरकारें और शिक्षाविद् अपने स्तर पर प्रचलित शिक्षा-मानकों में से 'श्रेष्ठ' का चयन करें और उसी मानक को राष्ट्रीय-स्तर पर लागू करें ताकि वर्ग-वर्ण के भेद की मानसिकता ही न पनप सके।

युगीन आवश्यकता की दृष्टि से अंग्रेजी-माध्यम की शिक्षा के आग्रह ने समग्र भारतीय-समाज को बेचैन कर दिया है। यह मानसिकता इतनी व्यापक हो चली है कि अति साधारण-स्तर के माता-पिता भी अपने बच्चों का भविष्य सँवारने के लिए निजी स्कूलों के अनाप्-शनाप् व्यय का भार भी उठाने को तैयार रहते हैं। भले ही वे दरिद्रता में बसर करें, उधार-ग्रस्त हो जायें मगर पेट पर पट्टी बाँधे वे अपने बच्चों के साथ अपना भी स्वप्न साकार होने का मूल्य चुकाते चले जाते हैं। इसी के साथ संलग्न है कई तरह के 'प्रोफेशनल-कोर्सेस' की ट्रेनिंग और कोचिंग जिनका मूल्य चुकाकर छात्र व्यावसायिक-योग्यता प्राप्त करते हैं।

इस तरह बाज़ार के दबाव में बिखरे हुए शैक्षणिक-तंत्र को एक सूत्र में पिरोना केन्द्र और राज्य-सरकारों की ज़िम्मेदारी है। प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के सरकारी-स्कूलों का

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

देशव्यापी संजाल शिक्षा के प्रति हमारी राष्ट्रीय-प्रतिबद्धता का प्रमाण है। आज़ादी के बाद लगभग सातवें दशक के बीच इसी शैक्षिक-तंत्र के बीच शिक्षा के सभी क्षेत्रों में होनहार प्रतिभाएँ पनपती रही हैं जो अभी तक कार्यरत हैं। किन्तु इस तंत्र में युगानुसार बदलाव नहीं किये गये अत: निजी स्कूलों के उद्‌भव ने समय की जरूरतों को पूरा करते हुए सामाजिक-आवश्यकता को पूरा किया। पिछले एक साल की अवधि में केन्द्रीय सरकार के मानव संसाधन मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने देश के शैक्षिक ढाँचे में बदलाव की जो कोशिशें की हैं उनका असर भी दिखने लगा है। मगर इतना ही पर्याप्त नहीं।

राष्ट्रीय सुरक्षा, प्रशासन जैसे मजबूत-तंत्र की तरह इस शिक्षा-तंत्र को मजबूत बनाने की ज़रूरत है ताकि मौजूदा प्रतिस्पर्धा के बीच अनुशासन, गुणवत्ता, और उत्तम परिणाम की दृष्टि से यह राष्ट्रीय शिक्षा-तंत्र एक मानक बन सके। दूसरी ओर वेतनमान बढ़ाये जा चुके हैं, संसाधनों की कमी नहीं है फिर आखिर क्या कमी है कि हमारा यह तंत्र क्रमश: कमज़ोर पड़ रहा है? कभी-कभार कोई शिक्षाविद् इन स्थितियों की ओर संकेत करते भी हैं तो उनके विश्लेषण-परक तथ्य अध्यापकों की गुटबाजी, खेमेबाजी, नारेबाजी के बीच खो जाते हैं।

इस विशाल शैक्षिक-तंत्र की आन्तरिक-विसंगतियाँ दूर करने के लिए हमारा विनम्र सुझाव है कि अन्य सार्वजनिक-उपक्रमों की तरह केन्द्र और राज्य की सरकारें इस क्षेत्र में भी सार्वजनिक-निजी-भागीदारी आमंत्रित करें। सतत निरीक्षण, परीक्षण एवं संसाधनों के अन्य स्रोत एकत्र करते हुए इस जन-सहभागिता (पब्लिक-प्राईवेट-पार्टनरशिप) द्वारा यह समग्र तंत्र फिर से अपनी गरिमा प्राप्त कर सकेगा, प्रतिस्पर्धा में अग्रसर होगा और छात्रों में भी जागृत हो सकेगा पूज्य-पूजा भाव....!

है धर्म पहुँचना नहीं
धर्म तो जीवन भर चलने में है,
फैला कर पथ पर स्निग्ध ज्योति
दीपक समान जलने में है।

सर्वेक्षण

● **पंच परमेश्वर :** पंच, पंचायत, पंचायतन की प्रतिष्ठा भारतीय जन, धर्म और समाज के बीच आदिकाल से आज तक कायम है। पंचायत के फैसलों से चलता है गाँव, देश। पिछले दिनों सगोत्र-विवाह प्रकरण और पंचायत के निर्णय से विवाहित युवक-युवतियों की हत्या के प्रसंग अखबार की सुर्खियों में रहे। हरियाणा की खाप-पंचायत के इन फैसलों को असामाजिक, अमानुषिक जैसी गालियों से नवाज़ा गया किन्तु कोई भी अदालत इसके खिलाफ कार्रवाई न कर सकी क्योंकि न वाद प्रस्तुत हुआ, न कोई वादी था न ही कोई प्रतिवादी। सर्वोच्च अदालत के समक्ष सगोत्र विवाह के समर्थन में एक अपील प्रस्तुत की गयी थी किन्तु अदालत के यह पूछने पर कि किस हिन्दू-शास्त्र में सगोत्र-विवाह का निषेध है?, याचिका कर्ता उत्तर नहीं दे पाये, यह भी विडम्बना ही है। जब मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य-स्मृति आदि प्राचीन वैधानिक-ग्रन्थों की परम्परा में बारहवीं सदी तक लिखे गये सभी ग्रन्थ इस सम्बन्ध में स्पष्ट निर्देश देते हैं, निषेध करते हैं और समग्र भारतीय समाज में उत्तर/दक्षिण में, कहीं भी सगोत्र-विवाह नहीं किये जाते। आश्चर्य है कि भारतीय न्याय-संहिता को भारत के इस सामाजिक-विधान का परिज्ञान नहीं। दूसरी ओर आधुनिक विज्ञान भी शारीरिक-संरचना की दृष्टि से सगोत्र-विवाह का निषेध करता है। इतिहास में ऐसे प्रसंग बार-बार आये हैं और उन पुरानी पंचायतों ने सगोत्र-विवाह करने वाले युग का जातीय और सामाजिक बहिष्कार किया है न कि उनकी मौत का फरमान जारी किया। इक्कीसवीं सदी में इस तरह के, मध्यकाल से ज्यादा क्रूर हत्या के निर्णय चौंकाने वाले हैं। आज के दौर में देश की किसी पंचायत के ऐसे अमानुषिक-निर्णय उन्हें हत्यारोपी ही सिद्ध करते हैं जिनका स्थान जेलों में है। निरपराध नौजवानों के हत्यारे पंच, परमेश्वर नहीं हो सकते।

●● **काले मेघा पानी दे :** थाली-कटोरा बजाते बच्चों, नौजवानों ने पानी की फुहारों के बीच मेघराज की अभ्यर्थना की तो कई जगह देवराज इन्द्र की प्रसन्नता के लिए वर्षा-यज्ञ आयोजित किये गये। मगर मानसून रूठा है तो रूठा ही है। इधर उत्तर भारत के मैदानों पर आग बरसा रहा है सूरज। धरती का सीना फट गया है, कुएँ-तालाब-नहर-बावड़ी सब सूख चले हैं; नदियाँ तो सिमट ही रही हैं, स्रोत भी सूख चले हैं, धरती का जलस्तर काफी नीचे जा चुका है। बाज़ार में खाद्यान्न की कीमतें बेकाबू होती जा रही हैं, जिस पर नियंत्रण पाने के लिए सरकारें भी मानसून की प्रतीक्षा कर रही हैं। लेकिन यह प्रतीक्षा किसानों की आँखों में, सरकार के सपनों में और जनता की जरूरतों में अलग-अलग है। मानसून के लिए पर्यावरण-संरक्षण को वैधानिक-दायित्व से जोड़ना होगा अन्यथा अकुलाता रहेगा कवि-मन...

आज भी बूँदें बरसेंगी
आज भी बादल छाये हैं,
आज भी जनता भूखी है और कल भी जनता तरसी थी,
आज न रिमझिम बरखा होगी, ना ही कल बारिश बरसी थी,
धरती, फूल, आकाश, सितारे सब सपना-सपना बेपानी...।

—परागकुमार मोदी

आधुनिक विज्ञापन : कला एवं व्यवहार

लेखक
डॉ० अर्जुन तिवारी

प्रथम संस्करण : 2010 ई०
पृष्ठ : 252

जर्नलिज़्म का एक बलशाली, प्रभावकारी स्वरूप 'मार्केट ओरिएण्टेड जर्नलिज़्म' है। समाचारपत्र बाजार-मित्र, ग्राहक-मित्र, उपभोक्ता-मित्र हो चुके हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया इसी के चलते गोल्ड, ग्लोरी और ग्लैमर का पर्याय है। लाल रुधिर-कण के रूप में मीडिया की रगों में प्रवाहित होने वाला विज्ञापन आज सर्वसमर्थ सत्ता के रूप में सुप्रतिष्ठित है। व्यवसाय-जगत का शुभेच्छु, औद्योगिक क्रान्ति का अग्रदूत, राष्ट्र-हित का चिन्तक, पब्लिक वेलफेयर का प्रमोटर, विपणन का प्रेरक, बेहतर जीवन-स्तर की कामना पैदा करने वाला हमदर्द विज्ञापन अपने में एक मनोरम कला, व्यवसाय-प्रबन्धन का साधन, रोजगार का विस्तृत क्षेत्र है जिसके सन्दर्भ में यह ग्रन्थ प्रस्तुत है। *शेष पृष्ठ 4 पर*

भीख ! तेरे रूप अनेक

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र
पूर्वकुलपति, शिमला (हिमाचल प्रदेश)

मानी बात है कि अब पहले जैसी गरीबी नहीं रही। बचपन में गाँव की श्रमिक बस्ती को 'गोबरहा' तक खाते देखा था। 'गोबरहा' की व्याख्या करते हुए भी मन असीम करुणा एवं लज्जा से काँप उठता है। परन्तु बिना बताये पाठक समझेंगे भी तो नहीं! चैत-वैशाख का महीना गाँवों में मँड़ाई का होता था। खेतों की कटी फसल खलिहान में आती थी। चार बैलों को परस्पर गरौंधी (गले की रस्सी) से जोड़कर, गेहूँ और जौ की मँड़ाई की जाती थी। तीसरे या चौथे दिन 'दौर' (जौ या गेहूँ के डंठल) 'सीझ' (सिद्ध) जाती थी। सीझने का अर्थ था गेहूँ या जौ का नन्हे भूसे तथा अन्न के रूप में पृथक् हो जाना। अब बस, एक काम शेष था—ओसाई। अनुकूल हवा बहने पर इस सीझे हुए ढेर को ओसा कर अन्न तथा भूसा अलग कर लिया जाता था।

मँड़ाई प्रात: नौ बजे से शाम चार तक चलती थी। इस बीच गेहूँ या जौ की 'पैर' पर चक्काकार घूमते बैल मुँह धँसा-धँसा कर खाते भी रहते थे। विशेषत: जैसे-जैसे, बैलों के पैरों से कुचली-तोड़ी गई 'पैर' भूसा बनती जाती थी, चतुर बैल ढेर का ढेर अन्न ढूँढ कर निगल जाते थे। परन्तु यह 'अ-चर्वित' अन्न पचता तो था नहीं, उनके गोबर के साथ बाहर आ जाता था। मँड़ाई करने वाले मजदूर की औरत इस गोबर को इकट्ठा करती थी। उसे तालाब के पानी से साफ करती तथा साफ-सुथरे अन्न को एकत्र कर लेती। यथावसर इस अन्न को भी चक्की में पीस कर आटा बना लिया जाता था तथा खाने के उपयोग में लाया जाता था।

आज इस जुगुप्सित प्रक्रिया का उल्लेख भी विचित्र प्रतीत होता है। परन्तु 'गोबरहा' खाने की यह जीवन्त परम्परा मैंने प्रत्यक्ष देखी है।

परन्तु अब ऐसा नहीं है। आज शासन की कृपा से दलित, श्रमिक बस्तियाँ भी सुधर गई हैं। चकबन्दी के कारण सबको आबादी मिल गई है। खेती, व्यवसाय तथा धन्धा करने के लिये सबको शासन से आर्थिक सहायता मिल रही है। ग्रामसमाज की भूमि पर भी सर्वप्रथम भूमिहीन श्रमिकों का ही अधिकार है। अब राष्ट्र में शायद ही कहीं 'बेगारी' की प्रथा हो। अन्यथा पूरा का पूरा घर, जमींदार के घर बिना किसी पारिश्रमिक के काम करता था। यह निर्मूल्य श्रम ही 'बेगारी' कहा जाता था। यह सब देखते हुए ही लगता है कि राष्ट्र अब स्वतन्त्र हो गया है तथा समुन्नति की राह पर है।

परन्तु इस आर्थिक समुन्नति के बावजूद समाज की हृदयहीनता बढ़ी है। व्यक्ति की परोपकार-भावना, सहिष्णुता, दानशीलता, उदारता तथा सरलता में अचानक कमी आई है। गाँवों में सारंगी की धुन सुनते ही गृहिणियाँ चौकन्नी हो जाती थीं, जोगी को भीख देने के लिये। भीख देने में कोई कोताही नहीं। महिलाओं के हाथ 'अँकोरहे' होते थे। वे नाम मात्र की भीख नहीं अपितु 'उदरम्भरि' देती थीं। अनेक जोगी, सरवन (श्रवणकुमार का चरित गाने वाले) बरुआ (वामन भगवान् की कथा गाने वाले) तथा साईं (मुस्लिम भिखारी) तो चिरपरिचित होने के कारण मनचाही भीख भी माँग लेते थे, जैसे—दाल, गुड़ आदि।

आज वह बात नहीं रही। अब तो भिखारी को आता देख प्राय: लोग सामने से हट जाते हैं, किवाड़ बन्द कर लेते हैं, या फिर प्रतीक्षा करते हैं कि दस-पन्द्रह बार चीख-चिल्ला कर वह स्वयं द्वार छोड़ दे। भिखारी भी पहले जैसे नहीं रहे। अब वे गाँवों में कम बस-स्टेशनों, रेलवे प्लेटफार्मों तथा चलती ट्रेनों में अधिक हैं। यहाँ उन्हें असीम सुविधा है क्योंकि इन स्थानों पर पर्याप्त नई-पुरानी भीड़ है। भीड़ के पास पैसा है। हर कोई भीख देता ही है, चाहे उदारतावश दे, चाहे पिण्ड छुड़ाने के लिये दे, चाहे प्रतिस्पर्धावश दे।

दिल्ली के 'अन्तरराज्यीय बस अड्डे' पर मैंने अपनी आँखों के सामने, घण्टे भर में, एक पंगु युवती को सैकड़ों रुपये वसूलते देखा। अद्भुत पुरुषार्थ था उसका! चारों हाथों-पैरों पर फिरहिरी की तरह भागती वह युवती, नई भीड़ के एक भी व्यक्ति को कोरा (unattended) नहीं छोड़ रही थी। एक रुपये के सिक्के से नीचे तो कोई देता नहीं। यदि उसने तीन-चार घण्टे भी भाग-दौड़ कर ली तो निश्चय ही तीन-चार सौ रुपये कमा लिये। परन्तु सच मानिये, इन्हें भीख देकर आप अपराध करते हैं। क्योंकि इनमें कोई भी गरीब या लाचार नहीं होता। ये सब अपराधियों के बड़े कबीले के सदस्य होते हैं। एक-एक जत्थे में बीसों सदस्य होते हैं, विविध वय तथा शरीर के। कुछ अपंग, कुछ अपंग बनाये गये, कुछ घरों से किडनैप किये गये, कुछ डरा-धमका कर साथ रखे गये। ये चाह कर भी भाग नहीं सकते। अपराधी कबीला इतना समर्थ है कि उन्हें धर दबोचेगा या फिर मार ही डालेगा। शाम तक सारी भीख का हिसाब-किताब होता है, जो हजारों में आता है। ये आराम से स्टेशनों के बाहरी शेड्स में रहेंगे, रेलवे नलों से हरहरा कर नहायेंगे, रेलवे के ही कोयले से रसोई पकायेंगे तथा मल-मूत्र से सारा वातावरण गन्दा करेंगे।

इन अपराधी मानसिकता के भिखारियों को आप पुनर्वासित भी करना चाहें, रोजी-रोटी भी देना चाहें तो इन्हें स्वीकार नहीं। क्योंकि ये परिश्रम तो करना ही नहीं चाहते। बँधकर कहीं रहना भी इन्हें पसन्द नहीं। शहरों में ही इनका स्वर्ग है। ये हर फन में माहिर हैं। प्रभुकृपा से यदि जत्थे में दो-चार सुन्दर युवतियाँ हो गईं तो क्या कहना? ये उन्हें भी कमाई का साधन बनाने में कोई संकोच नहीं करते। बस की यात्रा करते अनेक बार देखा कि शहरों या कस्बों से दो-चार कि०मी० पूर्व ही कञ्जर-बस्ती की दो-चार महिलायें, सड़कों के इर्द-गिर्द मँडरा रही हैं। वस्तुत: ये 'यजमान' ढूँढ रही होती हैं। और इनके यजमान होते हैं ट्रकों के ड्राइवर और खलासी। इन्हें शरीर-सुख चाहिये और उन्हें पैसा! यहाँ किसी दलाल या बिचौलिये की जरूरत ही नहीं।

भारतीय-समाज में दानी और भिक्षुक समान रूप से ही समाहत थे। भिक्षावृत्ति निन्द्य होते हुए भी आदरणीय थी। क्योंकि यह कोई पेशा, छल-छद्म अथवा षड्यंत्र नहीं थी (जैसा कि आज है)। भिक्षावृत्ति प्राय: वही अपनाता था जो दैवसंकट-ग्रस्त होता था, जो सर्वथा निरुपाय-निराश्रित था। जो मात्र भरण-पोषण के लिये माँगता था, न कि बैंक-बैलेंस बनाने के लिये। फलत: इन भिक्षुकों के प्रति भी भारतीय-समाज अनुग्रही, कृपालु तथा सदय था।

जब माँगने वालों का हुलिया बदल गया तो देने वालों में भी परिवर्तन तो होना ही था। कुछेक अत्यन्त दयनीय भिक्षुकों को छोड़, अब प्राय: किसी पर दया नहीं आती और न ही कोई कुछ देता है। वस्तुत: भिक्षावृत्ति अब **'कम समय में पैसा बटोरने की'** शार्टकट मेथड के रूप में काम आ रही है। महानगरों के पास ट्रेन पहुँची नहीं कि हिंजड़ों का दल डिब्बे में घुसा—हथोड़ी चटकाते। हाँ भैया! निकालिये, बहनजी! एक बड़ी नोट बढ़ाइये बाबूजी बहूजी! इस लहजे में ये हिंजड़े वसूली करते हैं जैसे कभी गाँवों में अमीन मालगुजारी वसूल करता था।

अब इसी भिखमंगई का शिष्ट और गोपनीय तरीका भी देखें। यह तरीका समूचे राष्ट्र में व्याप्त है छोटे से लेकर बड़े कार्यालयों में। इसे पारम्परिक भाषा में 'घूस' तथा कार्यालयीय भाषा में 'सुविधा-शुल्क' कहते हैं। जैसे टार्च की रोशनी घने अँधेरे में भी आलोकपथ का निर्माण करती है, ठीक उसी प्रकार यह सुविधाशुल्क (घूस) भी असम्भावनाओं के ठोस पर्वत में घुसने के लिये सुखद सम्भावना की 'टनल' (सुरंग) छन भर में बना देता है।

सारा देश इसी शिष्ट/गोपनीय भिक्षावृत्ति से प्रगति-पथ पर अग्रसर है। इञ्जीनियर्स ठीकेदारों से यही भीख पाते हैं 'कमीशन' के रूप में। पूछिये तो कहेंगे—हम कुछ माँगते थोड़े न हैं?

यह तो हमारा कमीशन है जो सदा-से काण्ट्रैक्टर देता रहा है इञ्जीनियर को 'बोनस' के रूप में! परन्तु सावधान! यह कमीशन कोई बोनस नहीं है। ठीकेदार द्वारा अर्पित कोई 'कृतज्ञता-धनराशि' नहीं है। प्रत्युत यह कमीशन होता है इञ्जीनियर के देशद्रोह का पुरस्कार। वह ठीकेदार द्वारा बनवाये गये घटिया पुलों, इमारतों तथा सड़कों को जो 'उत्तमकोटिक' होने का प्रमाणपत्र देता है तथा उसका करोड़ों का बिल जो आनन-फानन में पारित करा देता है, उसकी उसी 'बेईमानी' के पुरस्कार का नाम है कमीशन। डॉक्टर, वकील, अधिकारी—सब इसी रोग से ग्रस्त हैं।

घूस मिलता ही है गलत काम के लिये! फर्जी शैक्षिक प्रमाणपत्र हो, फर्जी एफीडेविट हो, किसी की फाइल गुम करानी हो, किसी की फाइल हथियानी हो, नियुक्तिपत्र पर लिखे 'अ-स्थायी' का 'अ' मिटवाना हो अथवा स्थायी से पूर्व अ को जुड़वाना हो, यानी कोई भी पापपूर्ण कागजी हेरफेर करवाना हो तो उसका एकमात्र स्रोत है सुविधाशुल्क! क्या महिमा है इस सुविधाशुल्क की कि हमारे सेनाधिकारी तक गोपनीय सैन्य सूचनायें शत्रुओं तक पहुँचा रहे हैं। सारे राजनेता सिर से पाँव तक इसी घूस के मैले से लथपथ, गन्धा रहे हैं। उनके बीच, ईमानदार जनता का साँस लेना दूभर हो रहा है। और नेता हैं कि उस मैले को 'मलयचन्दन' सिद्ध करने पर लगे हैं। अपनी कुछ पंक्तियाँ याद आ रही हैं—

तन-मन में मावस भरे हुए
हम दौड़ रहे उजियाले को।
है सूख गई जीवनलतिका
बस, सींच रहे हैं थाले को!!
ऐसी है आस लगी धन की
ऐसी है प्यास लगी धन की।
धन ही ईश्वर है, जीवन है
धन ही है धर्म, सजीवन है!!

पृष्ठ 2 का शेष

आधुनिक विज्ञापन : कला एवं व्यवहार

विज्ञापन की अवधारणा, मार्केटिंग, पब्लिसिटी, विज्ञापन के मॉडल, विज्ञापन-माध्यम, विज्ञापन एजेंसी, विज्ञापन अपील, विज्ञापन-अभियान, ब्राण्ड एम्बेसडर, विज्ञापन बजट, संचार-क्रान्ति और विज्ञापन, विज्ञापन का इतिहास, विज्ञापन अनुसंधान-सम्बन्धी विभिन्न तथ्यों को चार्ट, रेखाचित्र तथा उदाहरण के द्वारा विषय-वस्तु को बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है। 'विज्ञापन और आधी दुनिया', 'भ्रामक विज्ञापन', 'आधुनिक विज्ञापन' जैसे अध्यायों में विज्ञापन के अधुनातन स्वरूप के प्रति बुद्धिजीवियों की चिन्ता का विश्लेषण है। विज्ञापन को विवादरहित बनाने के निमित्त 'अधिनियम एवं आचार-संहिता' को विशद रूप में उपस्थापित कर बाजार की अशोभनीय अदम्य लालसा को नियंत्रित करने का मन्त्र बतलाया गया है। विज्ञापन, विपणन, प्रचार, जनसम्पर्क में लगे युवक-युवतियों हेतु यह ग्रन्थ प्राणद-स्पर्श सिद्ध होगा।

सजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-715-8
अजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-716-5
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

परदेस में हमारी हिन्दी

—डॉ० सुरेन्द्र गम्भीर

2007 में जब न्यूयार्क में विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ तो उसमें अनेक प्रवासी भारतीयों को एक बात खटकी कि उसमें प्रवासी भारतीयों की युवा पीढ़ी के लिए कुछ नहीं था। यदि इस सम्मेलन में हमारी युवा पीढ़ी के लिए भी कुछ कार्यक्रम होते तो प्रवासी सन्दर्भ में हमारी सांस्कृतिक भाषा और हमारे मूल्यों को कुछ प्रोत्साहन मिलता। इसी विचार ने 2009 में युवा हिन्दी संस्थान को जन्म दिया। इसी संस्थान के तत्त्वावधान में अमेरिका के अटलांटा में जून 19 से 28 तक 10 दिन का भाषा शिविर युवा पीढ़ी के 100 सदस्यों के लिए आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम को जहाँ एक ओर अमेरिकी सरकार की उदार आर्थिक सहायता प्राप्त थी वहीं दूसरी ओर अमेरिका के प्रतिष्ठित कई विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों का समर्थन और सहयोग प्राप्त था। इस शिविर के दैनिक कार्यक्रम और गतिविधियों का समायोजन भाषा-विज्ञान के शोध-समर्थित नियमों के आधार पर हुआ ताकि युवाओं को इस सांस्कृतिक अवगाहन से अधिकाधिक भाषा-लाभ हो और हिन्दी भाषा में प्रवीणता को बढ़ाने के लिए उनके भविष्य के द्वार खुलें। अमेरिकी सरकार को भी यह हमसे अपेक्षा है। युवा हिन्दी संस्थान के कार्यकर्ता उसी दिशा में पिछले कई महीनों से इसी योजना की क्रियान्वित करने के लिए प्रयत्नशील थे।

युवा हिन्दी शिविर के कार्यक्रम में प्रात: नौ बजे योगाभ्यास और उसके बाद हिन्दी शिक्षण की कक्षाएँ, कम्प्यूटर लैब, हस्तकला, अनेकानेक खेल (क्रिकेट, बैडमिंटन, टेबिल टेनिस, शतरंज, खो-खो आदि), नाटक, संगीत, नेचर वॉक, सांस्कृतिक कार्यक्रम और बॉलीवुड के गानों के साथ नाच का दैनिक कार्यक्रम शामिल था। दोपहर के खाने के समय हिन्दी की कुछ फिल्मों का प्रदर्शन (सब टाइटल के साथ)। शिविर की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि इसमें सब गतिविधियों में निर्देश और सभी बातचीत हिन्दी के माध्यम से सम्पन्न हुई। शिविर में अंग्रेजी का प्रयोग वर्जित था। भाषा और संस्कृति में अवगाहन और भाषा सीखने का तथा उसे आत्मसात करने का यही सहज तरीका है।

अमेरिका में हिन्दी की शिक्षा के लिए यह स्वर्णिम समय है। अमेरिका सरकार ने हिन्दी को एक महत्त्वपूर्ण भाषा के रूप में स्वीकार किया है और फलस्वरूप सभी सरकारी स्कूलों में विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी को पढ़ाने के द्वार खोल दिए गए हैं। अमेरिकी सरकार का यह मानना है कि भविष्य में आर्थिक और राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरते हुए भारत के साथ अन्तरराष्ट्रीय व्यवसाय और राजनयिक सम्बन्धों के सन्दर्भ में हिन्दी का महत्त्व बहुत अधिक है और यह दिन-ब-दिन बढ़ने वाला है। इसी सार्वभौमिक राजनीतिक विश्लेषण को ध्यान में रखते हुए अमेरिका की अगली पीढ़ी को दुनिया की महत्त्वपूर्ण भाषाओं और उनकी संस्कृतियों के ज्ञान से लैस करना बहुत आवश्यक समझा जा रहा है और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस दीर्घकालीन योजना की व्यवस्था हुई है। भाषाओं की इस महत्त्वपूर्ण योजना को व्हाइट हाउस के नेशनल सिक्योरिटी लैंगवेज इनिशिएटिव के तहत क्रियान्वित किया जा रहा है।

कोई भी इससे असहमत नहीं हो सकता कि भाषा हमारे चिन्तन की वाहिका है और हर भाषा का हर मानव के कुछ विशिष्ट मूल्यों के साथ विशेष संयोग होता है। जहाँ एक ओर प्रवासी युवा पीढ़ी के सदस्य अमेरिका को एक समर्थ देश बनाने में अपना योगदान देंगे वहीं भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में वे अपने विभिन्न व्यवसायों के लिए भी अपने कॅरियर का मार्ग प्रशस्त करेंगे। हिन्दी भाषा ज्ञान के साथ हमारी युवा पीढ़ी के सम्बन्ध भारत के साथ भी सम्पुष्ट होंगे। उदीयमान भारत से लेकर अमेरिका तक सभी के भविष्य के लिए यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण दिशा है।

अमेरिकी समाज में द्विभाषी लोगों की माँग बराबर बढ़ रही है और भविष्य में यह और ज्यादा बढ़ने वाली है। चाहे वे डॉक्टर हों, वकालत के पेशे में हों, अन्तरराष्ट्रीय व्यवसाय में हों, सरकारी महकमों में हों, सब जगह दूसरी भाषा पर उस भाषा से सम्बन्धित समाजों के मूल्यों और अंतरनिहित विचारधाराओं को समझने वाले और उन पर अधिकारपूर्वक बात करने वालों को वरीयता प्राप्त है। अमेरिका के वर्तमान वयस्क कर्मचारियों को विदेशी भाषाओं की शिक्षा देने के लिए सरकार के कई अपने स्कूल भी हैं जिनमें वर्जीनिया में स्थित फॉरेन सर्विस इंस्टीट्यूट और मांट्रे कैलिफोर्निया में स्थित डिफेंस लैंग्वेज इंस्टीट्यूट प्रमुख हैं। *—दैनिक जागरण से साभार*

आकार डिमाई

प्रकार सजिल्द

पृष्ठ 152

ISBN : 81-7124-313-4 • मूल्य : रु० 200.00

प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक

डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव

'' प्राचीन भारतीय कला धर्म से अनुप्राणित है अत: धर्म की पृष्ठभूमि में कतिपय प्रतीकों की गवेषणात्मक विवेचना प्राचीन काल के कुछ प्रमुख प्रतीकों जैसे लक्ष्मी, पूर्ण कलश, स्वस्तिक, कमल एवं गंगा-यमुना का समावेश इस पुस्तक में है, जिनके सामाजिक महत्त्व, उपयोगिता, सांस्कृतिक एकता, गतिशीलता एवं विकास के रूपान्तर हम प्रतीकों के माध्यम से शिलालेखों पर उत्कीर्ण पाते हैं।''

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

पूर्णकलश

एक मांगलिक प्रतीक के रूप में पूर्णकलश का प्रयोग अत्यन्त प्राचीन काल से होता आ रहा है। हिन्दुओं की प्रत्येक पूजा एवं विशेष संस्कारों यथा उपनयन, विवाह आदि अवसरों पर पूर्णकलश रखने की परम्परा प्रचलित है। यद्यपि विभिन्न क्षेत्रों में इसके स्थापन की विधि में अन्तर है, तथापि इसमें निहित मूल भावना समान है। कहीं इस कलश को एक कसोरे से ढँक कर उसे फूल, पत्ती, स्वस्तिक आदि से अलंकृत करके रखते हैं, तो कहीं जलयुक्त कलश में पल्लव रखकर उस पर दीपक जलाते हैं अथवा कभी नारियल भी रखते हैं। घट रखने के विभिन्न रूपों में इसका अन्तिम रूप शुभ अवसरों पर अधिक प्रयुक्त होता है। प्राचीन काल से शुभ अवसरों पर इस मांगलिक प्रतीक के प्रयोग से यह प्रश्न स्वाभाविक ही है कि यह किस भावना का प्रतीक बना।

भारतीय कला में एक प्रतीक के रूप में इसके उद्‌गम के विषय में मतभेद है। कुछ विद्वान् पश्चिम जगत (सुमेर) से भारत में इसका प्रवेश मानते हैं और जब यह भारत में प्रवेश कर गया तो यहाँ उस पर दार्शनिक विचार आरोपित कर दिये गये। सुमेर से प्राप्त एक मुहर पर इसका सबसे प्राचीन रूप अंकित मिलता है। इसी से मिलता हुआ स्वरूप रूस से भी प्राप्त हुआ है, जिसमें एक चाँदी के ढक्कन का ऊपरी हिस्सा कलश के रूप में प्रदर्शित किया गया है। कलश एक पूर्ण खिले कमल पर अवस्थित है उसके मुख पर भी विकसित कमल दर्शाया गया है। यह ढक्कन रूस से 'काकेशिया' के 'कारमीर व्लर' नामक स्थान से उपलब्ध हुआ है। इस पर एक अभिलेख भी अंकित है, जिसमें लगभग आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व के नरेश 'आरगिशिटी' का नाम अंकित है। सुमेर और रूस से प्राप्त घटों की तुलना करें तो यह स्पष्ट है कि रूस से उपलब्ध कलश भारतीय कला में निरूपित घट के अधिक समीप है तथा सुमेरीय मुहर पर उत्कीर्ण घट भारतीय घट की आकृति से भिन्न है। सुमेर की मुहर पर उत्कीर्ण घट से निकलता हुआ वृक्ष कमल का पौधा नहीं प्रतीत होता तथा घट भी भारतीय घट के समान गोल नहीं है। यद्यपि कमल मिस्र और भारत का राष्ट्रीय पुष्प है तथापि मिस्र के कमल का आकार भारतीय कमल से भिन्न है। वह भारतीय कुमुदिनी के आकार से मिलता है। हड़प्पा संस्कृति में प्रफुल्ल कमल की अनुकृति के आभूषण प्राप्त हुए हैं जिसके आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कमल-पुष्प से हड़प्पावासी परिचित थे। रूस से प्राप्त घट का रूप सम्भवत: भारत से ही गया होगा, क्योंकि कमल वहाँ उत्पन्न नहीं होता और सुमेरीय घट को पूर्णतया पूर्णघट नहीं माना जा सकता।

भारत की प्राचीनतम एवं विकसित सभ्यता में अनेक ऐसे प्रतीक प्राप्त हैं जो किसी न किसी विचार अथवा वस्तु की ओर संकेत करते हैं। अति प्राचीन भारतीय कला का रूप प्रतीकात्मक एवं लक्षणात्मक रहा है। उसमें धर्म एवं दर्शन के रहस्य छिपे रहते हैं, जो तत्कालीन समाज में प्रचलित विचार के द्योतक हैं। पूर्णघट सौभाग्य, पूर्णतया एवं जीवन का प्रतीक है। अत: यह विचार करना है कि आदिम युग से इस जीवन के प्रतीक का क्या स्वरूप रहा होगा।

हड़प्पा संस्कृति में मातृ-देवी की उपासना प्रचलित थी। माता में एक-दूसरे जीवन को उत्पन्न करने की शक्ति है, अत: प्रागैतिहासिक युग में प्राय: माता को देवी शक्ति से सम्पन्न मानकर मानव उसकी उपासना करने लगा था। माता की गर्भावस्था की मूर्तियाँ हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई हैं। यूरोप के प्रेडमास्टन तथा आर्गनेशियन युग की कुछ छोटी एवं पत्थर-निर्मित मूर्तियाँ उपलब्ध हैं; जिनमें स्त्री की गर्भावस्था की ओर संकेत है। कुछ इसी प्रकार की प्रस्तर-धातु युगीन स्त्री-मूर्ति 'कान्सटेंकी' (रूस) से भी मिली हैं।[7] सम्भवत: गर्भिणी स्त्री के पेट और घट दोनों के समान गोलाकार को देखकर घट को गर्भिणी स्त्री का प्रतीक माना गया हो। कुछ ऐसी मूर्तियाँ भी उपलब्ध हैं जो घट के समान हैं और उनके मुख पर स्त्री का मस्तक रखा है। कतिपय ऐसी भी मूर्तियाँ उपलब्ध हुई हैं जिनके शीर्ष-स्थान पर कमल प्रदर्शित है। कालान्तर में इस अवधारणा ने जन्म लिया कि जल, देवता, यक्ष या वरुण का द्योतक है और घट में उसकी स्त्री यक्षिणी या लक्ष्मी[2] का निवास है। इस प्रकार घट में स्त्री और पुरुष के संयोग की कल्पना की गई। फलस्वरूप नये जीवन की उत्पत्ति हुई और इसका प्रतीक कमल को माना गया। मातृपूजा तो लगभग सभी प्राचीन सभ्यताओं में विद्यमान थी। अत: यह धारणा अप्रत्याशित नहीं है कि प्रारम्भ में कमल एवं लता से युक्त घट गर्भिणी स्त्री का द्योतक था, जिसकी पूजा से मनुष्य-सौभाग्य में वृद्धि मानी जाती थी।

भारतीय कला में इस पूर्णता के प्रतीक के दर्शन हमें भरहुत, साँची, अमरावती, नागार्जुनी कोंडा, एवं मथुरा आदि की कला में स्पष्ट होते हैं। क्रमश: इसका व्यवहार बढ़ता गया और आगे चलकर तो स्तूप के शीर्ष मन्दिर के शिखर और ध्वज के मुकुट के रूप में इसका प्रयोग होने लगा। कला में इसका रूप प्राय: अलंकृत घट तथा उससे निकलते पुष्प, कली, पत्ती तथा लता के माध्यम से प्रदर्शित है। घट पर कभी-कभी मेखला अथवा पाश भी दिखलाया गया है।

यद्यपि भारतीय कला में इसका स्थान बढ़ता गया तथापि भारतीय संस्कृति में इसकी विशिष्टता की उत्पत्ति कब हुई, यह प्रश्न अब भी संदिग्ध है। हड़प्पा की सभ्यता में कोई ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं उपलब्ध है, जिसके आधार पर यह निर्णय किया जा सके कि सिन्धुवासी पूर्णघट का निश्चित व्यवहार करते ही थे; तथापि कतिपय घटों पर अंकित पुष्प-चित्रण से ऐसा आभास होता है कि सिन्धु-उपत्यका के निवासी इसकी पूजा सम्भवत: करते रहे हों। यद्यपि यह सत्य है कि सिन्धुवासी जल की पूजा करते थे, किन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता, जिससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकें कि जल को घट में भर करके वे इसे पूजते रहे हों, चूँकि पात्रों पर चित्रण करना उनकी सहज-प्रवृत्ति थी अतएव यह उनकी निसर्गत: अलंकरण प्रवृत्ति का द्योतन करती है।

पूर्णघट का महत्त्व विशेषतया वैदिक काल से प्रारम्भ होता है। इस काल में उसके मांगलिक एवं शुभ लक्षण प्रकट होने लगते हैं। ....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

कवि बनारसीदास की आत्मकथा

ज्ञानचन्द जैन

'' बनारसीदास की आत्मकथा भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य की एक अनूठी कृति है। उन्होंने तीन मुगल बादशाहों अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ का राज्यकाल देखा। बनारसीदास का आत्मचरित हिन्दी ही नहीं भारतीय भाषा का पहला आत्मचरित है। उनका आत्मचरित उनके काल का एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक तथा ऐतिहासिक दस्तावेज है।''

आकार डिमाई

प्रकार सजिल्द

पृष्ठ 104

ISBN : 81-7124-507-2 • मूल्य : रु० 80.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

मुगलकालीन एक व्यापारी परिवार की तीन पीढ़ियों की गाथा

....बनारसीदास ने अपने व्यापारी जीवन का श्रीगणेश 24 वर्ष की अवस्था में जहाँगीर के पाँचवें राज्यवर्ष में किया। पिता ने 18 वर्ष की अवस्था में अकबर के चौदहवें राज्यवर्ष में अपना व्यापारी जीवन आरम्भ किया था। वह पाँच वर्ष की अवस्था में अनाथ (पितृविहीन) हो गए थे, इसलिए उन्होंने निज उद्यम तथा पुरुषार्थ से अपने बल पर अपने पैरों पर खड़ा होना सीख लिया। किन्तु बनारसीदास को तीस वर्ष की आयु तक अपने पिता की छत्रछाया प्राप्त रही। माता-पिता के इकलौते पुत्र होने के कारण उनकी समस्त माया-ममता के केन्द्र रहे। उनमें स्वावलम्बन की वृत्ति देर से पनपी।

पिता का अनुकरण करते हुए उन्होंने भी व्यापार के लिए राजधानी आगरा की ओर प्रयाण किया। पिता ने दो सौ रुपयों की पूँजी लगाकर उनके व्यापार के लिए बीस मन घी, दो कुप्पे तेल तथा जौनपुरी कपड़ा खरीदा। इसके अतिरिक्त अपने घर के माल से दो जड़ाऊ पहुँची, दो जड़ाऊ मुद्राएँ, चौबीस मानिक, चौतीस मणि, नौ नीले पन्ने, चौबीस गाँठ चुन्नी तथा फुटकर जवाहरात दिये। सबका भाव कागज पर लिख दिया। इसके बाद पुत्र को बुलाकर अपनी हार्दिक इच्छा प्रकट की—अब तुम गृहस्थी का भार अपने कंधे पर संभाल लो। कुटुम्ब की रोटी का खर्च अब तुम चलाओ। यह कहकर उन्होंने पुत्र के माथे पर अपने हाथ से तिलक कर दिया।

पिता चौदह वर्ष की आयु से गृहस्थी का भार संभाल लेने की चिन्ता में जुट गए थे। इसीलिए बंगाल जाकर 6-7 महीने राय धन्नामल के अधीन पोतदारी की थी। अब उनकी आयु एक कम साठ हो गई थी। वृद्धावस्था में उनकी यह कामना सर्वथा स्वाभाविक थी कि पुत्र अब गृहस्थी के भार से उन्हें मुक्ति प्रदान करे। वह व्यापार के लिए आगरा में सात साल प्रवास करके लक्ष्मीवान बने थे। बनज (व्यापार) का सूत्र पूँजी होती है। बनारसीदास ने अपनी आगरा की पहली यात्रा में अपनी सारी पूँजी ही खो दी।

आजकल की भाँति उस काल में भी आगरा नगर यमुना के उस पार बसा था। इस पार आढ़तियों की कोठियाँ थीं। बनारसीदास ने आगरा पहुँचकर बीस मन घी और दो कुप्पे तेल एक आढ़तिए की कोठी पर उतार दिया। आगरा में उनके दोनों छोटे बहनोई—उत्तमचंद जौहरी और बंदीदास रहते थे। वह आगरा पहुँचकर कपड़े की गठरी सहित बंदीदास के घर पहुँचे। दो-चार दिन वहाँ रहने के बाद अपना अलग डेरा ले लिया। कपड़ा बेचने नित्य प्रति नखासा बाजार जाने लगे। सब कपड़ा बेच देने के बाद जब लेखा किया तो पता चला ब्याज और मूल देने के बाद उसमें घाटा रहेगा। तब जिस आढ़तिए के यहाँ घी और तेल रखा था उसकी कोठी गए। सब माल बेच देने पर चार रुपए का नफा हुआ। हुंडी आने पर उन्होंने सब दाम चुकता कर दिये।

उस काल में जवाहरात का व्यापार सबसे अधिक मुनाफे का माना जाता था। बनारसीदास को याद था, पिता को एक बार एक सौदे में सौ गुना मुनाफा हुआ था। किन्तु अपनी पहली व्यापारिक यात्रा में उन्हें सबसे गहरी और गुप्त चोट अपने साथ जो जवाहरात ले गए थे, उसमें लगी। आगरा जाते समय वह जवाहरात धोती के कच्छे (अंटी) में बाँध कर ले गए थे। वहाँ पहुँचने पर जब जामा-पायजामा पहनने लगे तो जवाहरात पायजामे के इजारबंद में बाँध लेते थे।

एक बार इजारबंद जब टूट कर गिर पड़ा तो उन्हें ज्ञान हुआ कि दो मोती उसी में बँधे थे। खुला जवाहरात भी उसी में बँधा था। सबसे हाथ धोना पड़ा, यह गुप्त चोट किसी को प्रकट नहीं की। मानिक इजारबंद के पल्ले में बाँध रखे थे। इजारबंद जब अलगनी पर टँगा था, चूहे काट कर ले गये। दो जड़ाऊ पहुँची एक ग्राहक को उधार बेची। उसने दिवाला निकाल दिया। एक जड़ाऊ मुद्रा गाँठ में बाँध रखी थी। गाँठ ढीली बँधी थी, जड़ाऊ मुद्रा गिर पड़ी और खो गई।

इस तरह बनारसीदास अपनी पहली व्यापारिक यात्रा में अपना सब कुछ गँवा बैठे। घर में कुछ फुटकर चीजें, बक्से में दो जामे और कुछ बर्तन बच रहे। इस बीच उन्हें जोरों का बुखार आया। दस लंघन करने पड़े। जब पथ्य लिया तो अच्छे हुए। एक महीना तक बाजार नहीं गए। खरगसेन चिट्ठी पर चिट्ठी लिख रहे थे, किन्तु बनारसीदास कुछ जवाब नहीं देते थे। उनके बहनोई उत्तमचंद जौहरी ने जब आगरा अपने घर पत्र लिखा तो उसमें समाचार दे दिया कि बनारसीदास पूँजी खोकर भिखारी हो गए हैं। खरगसेन ने जब यह समाचार सुना तो घर आकर पत्नी से बहुत कलह किया। फिर दुख से भर कर कहा—मैं तो पहले कहता था कि यह लड़का घर डुबा देगा। मेरा कहना सब सच हुआ। लड़का भिखारी हो गया। बेहया ने सारी पूँजी गँवा दी। फिर खैराबाद में समधियाने भी खबर भेज दी।

उधर आगरा में बनारसीदास घर की वस्तुएँ बेच-बेच कर खाते रहे। केवल दो-चार टके पास में बचे। दिन भर घर में बैठे रहते थे, हाट-बाजार नहीं जाते थे। उनके पास सूफी प्रेमाख्यानक काव्य **मधुमालती** और **मृगावती** की दो पोथियाँ थीं। रात में उन्हीं का सस्वर पाठ करते थे। उनके श्रोताओं में एक कचौरीवाला था। उसी से उधार कचौरियाँ लेकर पेट भरते थे। जब इस तरह कई महीने बीत गए तो बनारसीदास ने उसे अपना गुप्त हाल बता दिया। कहा—तुमने मुझे बहुत उधार दिया, अब आगे मत दिया करो। मेरे पास कुछ नहीं है। दाम कहाँ से वसूल करोगे। कचौरीवाला बड़ा नेक और उदार हृदयवाला था। बोला—तुम बीस रुपए की कचौरियाँ खा डालो। तुमसे कोई कुछ नहीं कहेगा। तुम्हारा जहाँ मन चाहे जाओ।

एक दिन उनके पीतिया ससुर ताराचंद साहू रात में उनके डेरे पर आए। आगरा के नामी सेठ थे। परवेज कटरा में उनकी बड़ी-सी कोठी थी। बड़े दुनियादार और व्यवहारशील थे। जब तक बनारसीदास श्रोताओं के बीच पोथी बाँचते रहे, चुपचाप बैठे रहे। जब सब श्रोतागण अपने-अपने घर चले गए तब विनती की—कल सुबह आपका न्योता है, हमारे घर भोजन करिए। सुबह फिर आए। बनारसीदास को अपने घर लिवा ले गए। कहा—चलिए, रसोई तैयार है।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

'शेखर जोशी' को 'अयोध्या प्रसाद खत्री स्मृति-सम्मान'

नयी कहानी के दौर के सशक्त कथाकार शेखर जोशी को वर्ष 2010 का 'अयोध्या प्रसाद खत्री स्मृति-सम्मान' दिये जाने की घोषणा अयोध्या प्रसाद खत्री जयन्ती समारोह समिति, मुजफ्फरपुर के संयोजक वीरेन नंदा ने की।

शेखर जोशी को यह सम्मान 05 जुलाई, 2010 को मुजफ्फरपुर में प्रदान किया जायेगा।

साहित्य मनीषी की उपाधि

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने आगरा में आयोजित अपने शताब्दी समारोह के अवसर पर राजस्थान के समीक्षक, समालोचक एवं साहित्यकार श्रीकृष्ण शर्मा को तथा वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० रामेश्वर वर्मा को 'साहित्य मनीषी' की उपाधि से सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्हें उपाधिपत्र, शॉल एवं स्मृतिचिह्न भेंट किये गये।

'बीच की धूप' सम्मानित

ग्वालियर (मध्य प्रदेश) की शिक्षण एवं साहित्यिक संस्था 'श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति' की ओर से लाला रामजी दास वैश्य स्मृति-चक्रधर सम्मान हेतु प्रख्यात कथाकार डॉ० महीप सिंह के उपन्यास 'बीच की धूप' का चयन किया गया। चयन समिति में सुप्रसिद्ध कवि एवं मीडिया विशेषज्ञ श्री राजनारायण बिसारियां एवं श्री कांतिकुमार जैन, पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, सागर विश्वविद्यालय शामिल थे। चक्रधर सम्मान में डॉ० महीप सिंह को शॉल, स्मृति चिह्न तथा इक्कीस हजार रुपये प्रदान किए गए।

इफ्को हिन्दी सेवी सम्मान से सम्मानित श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा

इफ्को के 12वें हिन्दी सम्मेलन में श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा को इफ्को हिन्दी सेवी सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें उनकी विगत 65 वर्षों से की जा रही सतत् और निस्वार्थ हिन्दी सेवा के उपलक्ष्य में दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० नित्यानन्द तिवारी और इफ्को के प्रबन्ध निदेशक डॉ० उदयशंकर अवस्थी द्वारा शॉल, पुष्प-गुच्छ, स्मृति-चिह्न और पुरस्कार राशि प्रदान करके किया गया। इस अवसर पर श्री शर्मा ने बताया कि यद्यपि हिन्दू धर्म, संस्कृति, साहित्य, इतिहास जैसे विषयों पर उनकी 125 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथापि उनका मुख्य कार्य क्षेत्र सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के क्षेत्र में रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग का प्रचार 1960 के आस-पास उस समय प्रारम्भ किया था, जब कार्यालयों में न तो हिन्दी टाइपराइटर थे न टाइपिस्ट और न आशुलिपिक, न फाइलों पर हिन्दी प्रयोग के लिए आदेश थे और न सहयोगी साहित्य। धीरे-धीरे प्रयास करते रहने पर बाद में सब कुछ सुलभ हो गया। कार्यालयों में हिन्दी में कार्य करने के सन्दर्भ में उनके 31 प्रकाशन निकल चुके हैं। इनमें 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' विशेष उल्लेखनीय है। यह विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित किया गया है और इसके तीन संस्करण निकल चुके हैं।

महाकवि पद्माकर सम्मान

पद्माकर साहित्य परिषद मकरोनिया, सागर ने इस वर्ष (2010) का पद्माकर सम्मान वरिष्ठ कवि निर्मल चन्द 'निर्मल' को प्रदान किया। सम्मान में श्रीफल, शॉल, प्रशस्ति पत्र और पाँच हजार एक रुपये की राशि मुख्य अतिथि प्रख्यात गीतकार बिट्ठलभाई पटेल द्वारा भेंट की गई।

'डॉ० यायावर' को 'विद्यावाचस्पति' उपाधि

डॉ० रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' को उनकी सुदीर्घ हिन्दी सेवा, सारस्वत साधना, कला के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों, शैक्षिक प्रदेयों एवं महनीय शोध कार्यों के आधार पर 'विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ ईशीपुर, भागलपुर' ने अपने 14वें महाधिवेशन में विद्यापाचस्पति की उपाधि से अलंकृत किया। यह उपाधि भागलपुर (बिहार) में आयोजित विद्यापीठ के महाधिवेशन में प्रदान की गई।

दूसरी ओर अखिल भारतीय साहित्य परिषद की राजस्थान शाखा ने उनके गीत संग्रह 'मेले में यायावर' पर उन्हें स्व० सेठ घनश्याम बंसल स्मृति हिन्दी काव्य संग्रह पुरस्कार भी प्रदान किया है।

संवत 2065 वि० के लिए उन्हें स्व० बाबू नूनू प्रसाद सिंह स्मृति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। सम्मान में पगडी, उत्तरीय, स्मृति, कलम डायरी, आर्ष साहित्य, 2501 की नकद राशि एवं तलवार प्रदान की गई।

'भीष्मसिंह चौहान स्मृति बालसाहित्य सम्मान'

भारतेन्दु बालसाहित्य पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी तथा अन्य कई पुरस्कारों से सम्मानित बाल साहित्यकार गोविन्द शर्मा को उनके समग्र योगदान के लिए 'भीष्मसिंह चौहान स्मृति बालसाहित्य सम्मान' प्रदान कर सम्मानित किया गया। बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र, भोपाल में आयोजित इस सम्मान समारोह की अध्यक्षता मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान सांसद कैलाश जोशी ने की।

संदीप राशिनकर पाठ सम्मान से सम्मानित

इंदौर। विगत दिनों बिलासपुर के लायंस क्लब सभागार में आयोजित भव्य समारोह में इंदौर के प्रसिद्ध चित्रकार संदीप राशिनकर को प्रथम पाठ कला सम्मान से सम्मानित किया गया।

छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध पत्रिका पाठ के देवांशु पाल ने बताया कि पाठ सम्मान के इस गरिमामयी आयोजन के अतिथियों सर्वश्री नंदकिशोर तिवारी, कथाकार कामेश्वर पाण्डेय आदि ने डॉ० स्नेह मोहनिश की उपस्थिति मे श्री राशिनकर को उनके कला क्षेत्र के दीर्घ अवदान के लिए सम्मान निधि, शॉल, श्रीफल व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

चतुर्वेदी की चिकोटी

साहित्य की सियासी उठापटक और तमाम खानाबंदियों से दूर कलम की खरी-खरी में भरोसा करने वाले व्यंग्यकार डॉ० ज्ञान चतुर्वेदी को हिन्दी अकादमी नई दिल्ली ने अपने राष्ट्रीय सम्मान के लिए चुना है। हालाँकि प्रतिक्रिया में वे साफ कहते हैं—''पुरस्कारों की बड़ी राजनीति है और मैं इससे दूर ही रहता हूँ। मेरे लिए अपनी लेखनी का भरोसा ही बड़ी उपलब्धि है।'' चतुर्वेदी के लेखकीय चरित्र ने निश्चय ही पुरस्कार और सम्मान से लोभ संवरण किया है। पुरस्कार के बहाने इस महान व्यंग्यकार की एक और टिप्पणी ने अदब के आलोचकों पर वार किया। बोले कि हिन्दी व्यंग्य की सम्यक आलोचना अभी तक नहीं हो पाई। इस जुमले के साथ वे जोड़ते हैं—'सही मायने में तो व्यंग्य की आलोचना के लिए भाषा ही नहीं बन पाई'। क्या यह उक्ति चुनौती बनेगी?

पं० प्रतापनारायण मिश्र-स्मृति-युवा साहित्यकार सम्मान हेतु साहित्यकारों से प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

प्रत्येक निम्न विधा में से एक साहित्यकार का चयन किया जायेगा। विधाएँ हैं—

1. कविता (काव्य), 2. कथा-साहित्य, 3. नाटक (रंगमंच), 4. बाल-साहित्य, 5. पत्रकारिता, 6. संस्कृत, 7. भोजपुरी साहित्य

सभी चयनित युवा साहित्यकारों को सम्मान में प्रशस्तिपत्र, प्रतीक चिह्न, अंगवस्त्र एवं रु० 5000/- की नकद राशि न्यास द्वारा भेंट की जायेगी।

सोलहवें सम्मान-समारोह हेतु प्रविष्टि शामिल करने के लिए 01 अगस्त 2010 को 40 वर्ष तक की आयु के (जन्मतिथि प्रमाण पत्र संलग्न करें) साहित्यकार ही अपने छाया-चित्र, आत्मकथ्य (बायोडाटा) अपनी सम्पूर्ण कृतियों का समीक्षात्मक परिचय सहित प्रकाशित नमूने की किसी पुस्तक के साथ 31 जुलाई 2010 तक निम्न पते पर भेज सकते हैं।

भाउराव देवरस सेवा न्यास, सरस्वती कुंज, निराला नगर लखनऊ-226020

संगीत सम्मान

गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा द्वारा संचालित नवोदित कलाकार समिति, नई दिल्ली द्वारा इण्डिया हैबिटैट सेन्टर के सभागार में दो दिवसीय संगीत समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें संगीत समीक्षक पण्डित रवीन्द्र मिश्र को 'शब्द शिल्पी सम्मान', पण्डित शीतल प्रसाद मिश्र एवं पं० संगीत नाहर को 'संगीत शिरोमणि सम्मान' पं० सुरेश गंधर्व एवं डॉ० राजीव वर्मा को 'संगीत भूषण सम्मान'—भारत मिश्र एवं सुभाष कांति दास को 'संगीत रत्न' सम्मान भेंट किए गए।

सूर्यबाला को 'प्रभात'

सांस्कृतिक संस्था 'सहयोग' द्वारा कथाकार-व्यंग्यकार सूर्यबाला को डॉ० सी०एल० प्रभात पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वरिष्ठ पत्रकार-कवि एवं 'नवनीत' के सम्पादक विश्वनाथ सचदेव की अध्यक्षता में हिन्दी के मूर्धन्य तमिल विद्वान तथा अमेरिका में भारतीय विद्या भवन के निदेशक डॉ० पी०के० जयरामन ने उन्हें सम्मान भेंट किया।

दवे को 'शताब्दी सन्दर्भ सम्मान'

मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति इंदौर अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रही है। संस्था ने इस वर्ष के 'शताब्दी सन्दर्भ पुरस्कार' के लिए मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष प्रो० रमेश दवे के नाम की घोषणा की है। उन्हें पुरस्कार स्वरूप 51 हजार रुपए की राशि दी जाएगी। यह सम्मान उन्हें इंदौर में आयोजित समारोह में दिया जाएगा। पुरस्कार के लिए प्रो० रमेश का चयन डॉ० नामवर सिंह की अध्यक्षता में गठित चार सदस्यीय ज्यूरी ने किया।

विनय उपाध्याय को सम्मान अलंकरण

भोपाल। सांस्कृतिक पत्रकारिता के क्षेत्र में सृजनात्मक उपलब्धियों और बहुआयामी लेखकीय योगदान के लिए श्री विनय उपाध्यय को माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय ने अपने 27वें स्थापना दिवस समारोह (19 जून) में सम्मानित किया। भोपाल में आयोजित समारोह के अवसर पर मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और वर्तमान सांसद श्री कैलाश जोशी, वित्तमंत्री श्री राघवजी भाई तथा गृहमंत्री श्री उमाशंकर गुप्त ने संयुक्त रूप से श्री विनय उपाध्याय को स्व० यशवंत अरगरे स्मृति सम्मान अलंकरण भेट किया।

डॉ० राजेन्द्र शंकर भट्ट 'महाराणा प्रताप सम्मान 2010' से सम्मानित

उदयपुर। ख्यातिनामा साहित्यकार एवं राजस्थान के पूर्व सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक डॉ० राजेन्द्र शंकर भटट् को सजीव सेवा समिति द्वारा महाराणा प्रताप की जयंती की पूर्व संध्या पर आयोजित मेवाड़ गौरव अलंकरण समारोह में श्रीफल व सम्मान राशि भेंट कर महाराणा प्रताप सम्मान 2010 से सम्मानित किया गया।

'स्पंदन' पुरस्कार के लिए प्रविष्टि आमंत्रित

भोपाल। साहित्य एवं कलाओं के लिए समर्पित संस्था 'स्पंदन' की संयोजिका उर्मिला शिरीष की विज्ञप्ति के अनुसार निम्नलिखित पुरस्कारों के लिए कृतियाँ आमन्त्रित की गई हैं। स्पंदन कथा शिखर सम्मान (निरन्तर सृजनशील वरिष्ठ साहित्यकार के लिए पुरस्कार राशि 31 हजार रुपए), स्पंदन आलोचना पुरस्कार (आलोचना कृति के लिए, उम्र 55 वर्ष), स्पंदन कथा पुरस्कार (श्रेष्ठ कृति कहानी या उपन्यास के लिए उम्र 50 वर्ष), स्पंदन कविता पुरस्कार श्रेष्ठ कविता संग्रह के लिए, उम्र 45 वर्ष। स्पंदन सिने गीतकार पुरस्कार (श्रेष्ठ सिने गीतकार के लिए, उम्र 50 वर्ष), स्पंदन सृजनात्मक पत्रकारिता पुरस्कार (श्रेष्ठ सृजनात्मक पत्रकारिता के लिए, उम्र 50 वर्ष), स्पंदन चित्रकला पुरस्कार (मौलिक एवं श्रेष्ठ चित्रकर्म के लिए, उम्र 50 वर्ष), स्पंदन रंगमंच पुरस्कार (श्रेष्ठ निर्देशन के लिए, उम्र 50 वर्ष), स्पंदन नृत्य पुरस्कार (शास्त्रीय नृत्य, उम्र 50 वर्ष)।

स्पंदन कथा शिखर सम्मान के अतिरिक्त अन्य सभी पुरस्कारों की पुरस्कार राशि 11 हजार रुपए है। कृतियों की दो प्रतियाँ 31 अगस्त, 2010 तक भेजें—उर्मिला शिरीष, संयोजक स्पंदन पुरस्कार, 59-बी, जानकी नगर, चूनाभट्टी, कोलार रोड, भोपाल-462042 (मध्य प्रदेश)

मीरा स्मृति-पुरस्कार हेतु काव्य कृतियाँ आमन्त्रित

इलाहाबाद। मीरा फाउण्डेशन द्वारा इलाहाबाद के साहित्य-भण्डार के सहयोग से कहानी और कविता की रचनात्मक मेधा को सम्मानित करने हेतु प्रतिवर्ष 'मीरा स्मृति पुरस्कार' प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार की राशि 25 हजार रुपए होगी जो इस वर्ष कविता पर दिया जाएगा। पुरस्कार हेतु पिछले दो साल की सन् 2008-09 की कृतियों पर विचार किया जाएगा। कवि की आयु 50 वर्ष तक की होनी चाहिए। प्रविष्टि 16 अगस्त, 2010 तक डॉ० अशोक त्रिपाठी, 483, कानूनगो अपार्टमेंट्स, 71 इन्द्रप्रस्थ एक्सटेंशन, दिल्ली-110092 के पते पर भेजें।

पं० गोविंद वल्लभ पंत पुरस्कार प्रविष्टियाँ आमंत्रित

केन्द्रीय गृह मंत्रालय के पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो द्वारा पुलिस, कारागार एवं न्यायालयिक विज्ञान से सम्बन्धित विषयों पर हिन्दी में लिखी मौलिक पुस्तकें पुरस्कार हेतु 30-09-2010 तक आमन्त्रित की गई हैं। जानकारी के लिए सम्पादक हिन्दी से ब्लॉक सं० 11, 3/4 मंजिल, सीजीओ कॉम्प्लैक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 से सम्पर्क करें। दूरभाष 011-24360371 एक्स०-253 तथा फैक्स-011-24362425

इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार

नई दिल्ली में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार योजना के अन्तर्गत सन् 2009-10 के पुरस्कार हेतु हिन्दी में लिखी मौलिक पुस्तकें आमन्त्रित की हैं। पुस्तकें अप्रैल, 2009 से 31 मार्च, 2010 के बीच प्रकाशित होनी चाहिए। पुस्तकें 20 अगस्त, 2010 तक पहुँच जानी चाहिए—उपनिदेशक (कार्यान्वयन) कार्यान्वयन-2, राजभाषा विभाग कमरा नं० ए-3, ए-विंग, दूसरी मंजिल, लोकनायक भवन, खान मार्केट, नई दिल्ली-110003, फोन : 24643622 विस्तृत जानकारी के लिए देखें http://rajbhasha.gov.in

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का मई 2010 का अंक मिला। धन्यवाद! इस अंक में प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र का 'आर्य बनाम हिन्दू—मूल भारतीय अथवा आक्रान्ता' शीर्षक विचारोत्तेजक शोध लेख पढ़ने को मिला जिसमें लेखक का सुविचारित चिन्तन एवं तटस्थ निर्णयक्षमता का परिचय मिला। लेखक ने अपने गहन अध्ययन एवं तत्त्वान्वेषी क्षमता से विषय का निर्णयात्मक प्रतिपादन किया है। मैं 'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से लेखक के विचारों का स्वागत करता हूँ तथा इसके सम्पादक को ऐसे महत्त्वपूर्ण लेख को प्रकाशित करने करने के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। **—डॉ० सभापति मिश्र,** हंडिया, इलाहाबाद

'भारतीय वाङ्मय' का मई 2010 अंक मिला। हार्दिक आभार! प्रत्येक अंक की भाँति इस अंक का सम्पादकीय भी समकालीन ज्वलंत प्रश्नों की पड़ताल करता है। आज बाजारवाद ने हमारी संवेदना, करुणा, नैतिकता को हाशिए पर धकेल दिया है परन्तु सभी इस बाजारतन्त्र के सम्मुख नतमस्तक हैं, कहीं से कोई आवाज नहीं, शायद यह मुर्दों का देश बनता जा रहा है। अंक के अन्य सभी आलेख व रचनाएँ भी उत्कृष्ट हैं।

—डॉ० वीरेन्द्र परमार, फरीदाबाद

'भारतीय वाङ्मय' का जन 2010 का अंक प्राप्त हुआ जिसके सम्पादकीय में दूरदर्शन की दुरस्थ संस्कृति तथा पुस्तकीय पठन के प्रति उदासीनता एवं उपेक्षा के भाव को इंगित किया गया है जो समसामयिक जवलन्त समस्या तथा भावी पीढ़ी के संस्कारविहीन होने का संकेत भी है। यह जनमानस के चिन्ता और चिन्तन की भी वस्तु है। स्थायी व अन्य स्तम्भ पूर्व की भाँति ही पाठकीय स्पंदन में सहभागिता कर सके हैं।

—डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय, अलीगढ़

अत्र-तत्र-सर्वत्र

गाँव हो या शहर इंटरनेट को बनाएँ दुधारू गाय

वर्ल्ड वाइड वेब के आने के बाद से लगभग हर इंटरनेट प्रयोक्ता के मन में एक सवाल जरूर उठा है कि क्या वह इस विशाल अन्तर्राष्ट्रीय नेटवर्क का इस्तेमाल धन कमाने के लिए कर सकता है? शायद ही कोई व्यक्ति हो जो थोड़ा अतिरिक्त धन (और वह भी यदि सम्भव हो तो बिना समय या श्रम खर्च किए) पाना न चाहता हो। अखबारों में ऐसे विज्ञापनों की भरमार है जिनमें लोगों को बिना कुछ किए इंटरनेट के जरिए धन कमाने के लिए आमन्त्रित किया जाता है। ऐसे अधिकांश विज्ञानपदाताओं का उद्देश्य आम आदमी की धनलिप्सा का लाभ उठाना है। ये या तो अपनी 'फीस' वसूलकर चलते बनेंगे या फिर आपसे ऐसे काम करवाना चाहेंगे जो अवैध या अनैतिक हैं।

यदि आप भी इंटरनेट को अतिरिक्त आय के स्रोत के रूप में देख रहे हैं तो ऐसे लोगों की शरण में जाने की जरूरत नहीं है। गलत तरीके अपनाए बिना और कोई जोखिम लिए बिना भी इंटरनेट पर अतिरिक्त आय अर्जित की जा सकती है। लेकिन 'बिना कुछ किए' नहीं। यदि आपके पास कोई हुनर है, या आप अपना समय और श्रम देने को तैयार हैं तो इतने बड़े इंटरनेट पर कहीं न कहीं, आपकी सेवाओं या विशेषज्ञता के कद्रदान जरूर मिल जाएँगे। आखिरकार इंटनेट है क्या? आप-हम जैसे सामान्य विश्व नागरिकों को जोड़ने वाला एक मंच ही तो? उन सब लोगों की भी आप-हम जैसी जरूरतें हैं। यदि किसी अमेरिकी नागरिक की कोई आवश्यकता कोई हिन्दुस्तानी व्यक्ति अपेक्षाकृत कम दामों में इंटरनेट के जरिए पूरा कर सकता है तो भला उसे क्या एतराज हो सकता है? जी हाँ, इंटरनेट पर पूरी तरह कानूनी ढंग से भी अतिरिक्त धन कमाया जा सकता है, बशर्ते आपके पास कोई उत्कृष्ट उत्पाद, सेवा, योग्यता या विशेषज्ञता हो। कुछ खास किस्म के कामों में तो इनकी भी जरूरत नहीं। और खुदा न खास्ता आपको इंटरनेट मार्केटिंग करने के तौरतरीके भी आते हों तो सोने पर सुहागा।

फ्रीलांसिंग, यानी किसी व्यक्ति या कम्पनी से औपचारिक रूप से जुड़े बिना उनका कोई काम पूरा करना। जो लोग पहले ही कहीं कार्यरत हैं वे अपने खाली समय में ऐसे कार्य करते हैं तो ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जिन्होंने फ्रीलांसिंग को ही अपनी आजीविका का माध्यम बनाया है। इंटरनेट पर वेब डिजाइनिंग से लेकर लेखन, ग्राफिक डिजाइनिंग, पेज डिजाइनिंग, प्रोग्रामिंग, विज्ञापन की कॉपीराइटिंग, टीवी कार्यक्रमों की स्क्रिप्टिंग, सेल्स और मार्केटिंग, फाइनेंस और प्रबन्धन से लेकर कानूनी सलाहकार सेवाओं, इंजीनियरिंग और मैन्यूफैक्चरिंग तक के फ्रीलांस प्रोजेक्ट उपलब्ध हैं। प्राय: ऐसे काम प्रोजेक्ट के आधार पर मिलते हैं और हर प्रोजेक्ट के लिए निश्चित राशि दी जाती है। ऐसे प्रोजेक्ट्स में जहाँ कम्पनियों को अच्छी दरों पर और जल्दी काम पूरा करवाने में आसानी होती है, वही फ्रीलांसर्स को अपना मौजूदा काम छोड़े बिना खाली समय में कुछ अतिरिक्त धन कमाने का मौका मिलता है और नए काम का अनुभव भी मिलता है।

फ्रीलांसिंग के इच्छुक व्यक्ति इलैंस, फ्रीलांसर, रेंट-अ-कोडर, लोगोवर्क्स, डिजाइनवपोस्ट आदि वेबसाइटों पर रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। ज्यादातर फ्रीलांसिंग साइटों पर बिडिंग के आधार पर प्रोजेक्ट दिए जाते हैं। यानी आपका शुल्क जितना कम, काम मिलने के आसार उतने ही अधिक। हालांकि काम की गुणवत्ता, सम्बन्धित व्यक्ति की वरिष्ठता, साख और अन्य ग्राहकों के अनुभवों को भी आधार बनाया जाता है। आपको मिलने वाले काम के बदले में वेबसाइट की ओर से थोड़ा सा शुल्क वसूला जाता है। कुछ वेबसाइटों की सदस्यता लेने के लिए भी शुल्क लिया जाता है।

दस साल का सीईओ

किसी कम्पनी का मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनने के लिए तो काफी पढ़ा-लिखा होना जरूरी होता है, पर मलेशिया की राजधानी कुआलालंपुर में रहनेवाले दस वर्षीय बालक आदी पुत्र अब्दुल गनी दो कम्पनियों का मुख्य कार्यकारी अधिकारी बन गया है। ये कम्पनियाँ आदी ब्राण्ड से विटामिन बेचती हैं। यह बालक 81,419 रु० प्रति घण्टे की फीस पर लेक्चर देने भी जाता है।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

स्मृति-शेष

ओमप्रकाश तापस का निधन

नई दिल्ली में ओम प्रकाश तापस का 26 अप्रैल को 52 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे वरिष्ठ पत्रकार थे, जो स्पष्टवादिता, स्वाभिमान और अपने जुझारू स्वभाव के कारण मित्रों के बीच 'खड़ाकू' के नाम से पुकारे जाते थे। स्वतन्त्र पत्रकारिता के बाद वे जनसत्ता (चंडीगढ़) से जुड़े और इसके बाद दिल्ली स्थित नवभारत टाइम्स में डेढ़ दशक तक कार्यरत रहे।

श्यामानंद जालान का निधन

कोलकाता में प्रख्यात रंगकर्मी, अभिनेता और सामाजिक कार्यकर्ता श्यामानंद जालान का 24 मई को लम्बी बीमारी के बाद 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे कुशल अभिनेता और एक ऐसे कलाकार थे जिसने कला और संस्कृति को अपने योगदान से समृद्ध किया। वह संगीत नाटक अकादमी दिल्ली के उपाध्यक्ष तथा दिल्ली के कथक केन्द्र के पदाधिकारी भी रहे। उन्होंने कोलकाता में हिन्दी रंगमंच की प्रस्थापना की और उसे राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया।

श्री जब्बार ढांकवाला का निधन

भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, हिन्दी लेखक, कवि एवं व्यंग्यकार श्री जब्बार ढांकवाला के दुर्घटनाजन्य निधन पर भोपाल के हिन्दी साहित्य जगत में मायूसी छा गयी। श्री ढांकवाला और उनकी पत्नी का देहान्त उत्तराखण्ड में एक सड़क दुर्घटना में हो गया था और उनका अन्तिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान के साथ छत्तीसगढ़ में किया गया।

साहित्यकार श्री विश्वंभर अरुण नहीं रहे

30 मई को जाने-माने साहित्यकार प्रो० विश्वंभर अरुण का निधन हो गया। उनकी 'तिल बड़े कातिल' और 'डॉ० रामविलास शर्मा : एक व्यक्त, एक अंकन' कृतियाँ बड़ी चर्चित रहीं। अनेक पाठ्यक्रमों में उनकी पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं। बाबू गुलाबराय ग्रन्थावली के चार खण्ड उनके सम्पादन में प्रकाशित हुए। पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख, कथाएँ आदि निरन्तर प्रकाशित होते रहे।

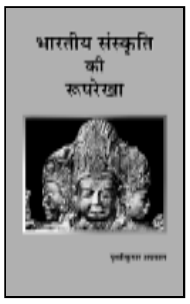

भारतीय संस्कृति की रूपरेखा

लेखक

पृथ्वीकुमार अग्रवाल

तृतीय संस्करण : 2010 ई०
अजि. रु०125 पृष्ठ : 280
ISBN : 978-81-7124-744-8

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

संगोष्ठी/लोकार्पण

बलदेवप्रसाद मिश्र शती समारोह

प्रसादयुगीन कवि, कथाकार, समालोचक तथा 'स्वतन्त्र भारत' के पूर्व साहित्य सम्पादक स्व० बलदेवप्रसाद मिश्र की जन्मशती के सभारम्भ पर साहित्यिक संघ द्वारा नाट्यकर्मी कुअंरजी अग्रवाल की अध्यक्षता में स्मृति गोष्ठी का आयोजन 'सोच विचार' पत्रिका के कार्यालय में हुआ।

इस अवसर पर आर्यभाषा संस्थान द्वारा प्रकाशित शती स्मारिका का विमोचन प्रो० मंजीत चतुर्वेदी द्वारा किया गया तथा स्व० मिश्र के कथाकार पुत्र अजय मिश्र की नवीनतम पुस्तक 'काशी की साहित्यिक परम्परा' का लोकार्पण समीक्षक वाचस्पति द्वारा किया गया।

गोष्ठी में सुविख्यात कवि ज्ञानेन्द्रपति, श्री कृष्ण तिवारी, प्रो० मंजीत चतुर्वेदी, प्रो० रामजी शर्मा, कुअंरजी अग्रवाल, अजय मिश्र, वृजेन्द्र गर्ग, प्रकाश श्रीवास्तव, हिमांशु उपाध्याय, नरोत्तम शिल्पी, रामअवतार पाण्डेय, पवन शास्त्री, डॉ० जीतेन्द्रनाथ मिश्र, नरेन्द्रनाथ मिश्र आदि उपस्थित थे।

भीलवाड़ा में बाल-साहित्य

भीलवाड़ा स्थित राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा प्रदत्त आंशिक अनुदान से प्रकाशित जिले के युवा बालसाहित्यकार सत्यनारायण 'सत्य' की कृति 'दिन आए फिर छुट्टी वाले' पर पाठक मंच गोष्ठी आयोजित की गई।

सुविख्यात बालसाहित्यकार डॉ० भैरूंलाल गर्ग के संयोजकत्व में आयोजित इस गोष्ठी में अध्यक्ष म० शिवदानसिंह राणावत कारोही थे, जबकि मुख्य अतिथि फतेहसिंह लोढ़ा व विशिष्ट अतिथि श्री रतनकुमार चटुल थे। पुस्तक पर समीक्षात्मक पत्रवाचन डॉ० मंजु कोठारी व डॉ० विष्णुकुमार व्यास ने किया। पुस्तक के सम्बन्ध में श्यामसुन्दर 'सुमन', डॉ० कैलाश पारीक, फतेहसिंह लोढ़ा ने भी अपनी समीक्षात्मक टिप्पणियाँ प्रस्तुत कर गोष्ठी को गरिमा प्रदान की।

भीलवाड़ा में बालसाहित्य लोकार्पण/ काव्यपाठ

भीलवाड़ा स्थित 'बालवाटिका' मासिक के तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में पर्यावरण विषयक काव्यगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री शिवदानसिंह राणावत ने की, मुख्य अतिथि श्याम बनवाड़ी थे। विशिष्ट अतिथि काशीलाल शर्मा व दयाराम मेठानी थे। मंचस्थ अतिथियों ने 'बालवाटिका' के पर्यावरण विशेषांक का लोकार्पण किया।

इस संगोष्ठी में प्रबुद्ध चिंतक व पर्यावरण प्रेमियों की उपस्थिति में पर्यावरण के विविध आयामों पर काव्यपाठ हुआ।

आवां का नाट्य मंचन

विगत दिनों कोलकाता की प्रसिद्ध हिन्दी नाट्य संस्था 'अभिनय' द्वारा प्रख्यात उपन्यास लेखिका चित्रा मुद्गल के बहुचर्चित उपन्यास 'आवां' का नाट्य मंचन कोलकाता के सुप्रसिद्ध रवीन्द्र सदन के 'शिशिर मंच' सभागार में किया गया।

544 पृष्ठों के उपन्यास को दो-सवा-दो घण्टे की प्रस्तुति में समेटना कुछ कम कष्ट साध्य कार्य न था, जिसे लगभग दो वर्षों की कठिन मेहनत के पश्चात निर्देशक प्रताप जायसवाल व नमिता जायसवाल ने अत्यन्त खूबी के साथ अंजाम दिया। इस नाटक की प्रस्तुति में 'आवां' के स्त्री विमर्श से सम्बन्धित पक्ष को पूरी संजीदगी से दर्शाया गया।

इस अवसर पर लेखिका चित्रा मुद्गल, प्रकाशक महेश भारद्वाज, प्रसिद्ध आलोचक एवं भारतीय भाषा परिषद कोलकाता के निदेशक डॉ० विजयबहादुर सिंह, प्रसिद्ध पत्रकार लेखक गीतेश शर्मा, सुप्रसिद्ध विद्वान कृष्ण बिहारी मिश्र, डॉ० शम्भूनाथ, कोलकाता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० अमरनाथ आदि उपस्थित थे।

मनुष्यता के लिए साहित्य से जुड़ना जरूरी

मानव ने चुनौतियों के बीच ही सभ्यता का विकास किया है। आज हम भूमण्डलीकरण के दौर में शामिल होकर आत्मकेन्द्रित होते जा रहे हैं। आज की केन्द्रीय चिन्ता मनुष्य के मनुष्य बने रहने की है। बाजार, पूँजी, सत्ता आदि मनुष्यता को छीने जा रही है। उपभोक्तावादी संस्कृति हमें हिंसक बनाती है, हिंसक रूप अख्तियार कर ही हम भौतिक सुख-सुविधाओं को अपनाना चाहते हैं। आज का समय सबसे कठिन समय है और क्रूर भी। साथ ही रचना विरोधी और मनुष्यता विरोधी भी है। साहित्य हमें मनुष्य होने की तमीज देता है। मनुष्यता के लिए हमें साहित्य से जुड़े रहने की जरूरत है।

उक्त विचार सुप्रसिद्ध साहित्यकार आलोचक प्रो० शिवकुमार मिश्र ने व्यक्त किए। वे महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ की ओर से 'हमारा समय और साहित्य' विषय पर आयोजित विशेष व्याख्यान समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने की।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि आज हम उत्तर आधुनिकता की बात करते हैं। दुनिया के कई सारे देशों में आधुनिकता भी नहीं आयी है। उन्होंने प्रो० मिश्र के वक्तव्यों का समर्थन करते हुए कहा कि यह सही है कि आज का समय क्रूर व मनुष्यता विरोधी है। उन्होंने आशावादी नजरिए से कहा कि मुश्किल समय में बेहतर साहित्य रचे जाते हैं। आज हम जितनी मुश्किल घड़ी से गुजर रहे हैं ऐसे में भी मनुष्यत्व के लिए अच्छी रचनाएँ रची जाएँगी।

श्रीमती मामचंद रिवाड़िया की कृति 'डॉ० भीमराव अम्बेडकर'

दिल्ली सचिवालय के सभाकक्ष में आयोजित कार्यक्रम में श्रीमती मामचंद रिवाड़िया की पुस्तक 'डॉ० भीमराव अम्बेडकर' का विमोचन मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने किया। इस अवसर पर सांसद सज्जन सिंह व चित्रकला संगम के मंत्री पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

संतोष खन्ना का कहानी-संग्रह 'आज का दुर्वासा'

साहित्य अकादेमी के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में श्रीमती संतोष खन्ना के कहानी संग्रह 'आज का दुर्वासा' को लोकार्पण केन्द्रीय राज्य मन्त्री डॉ० हरीश रावत ने किया। साहित्यकार लक्ष्मीशंकर वाजपेयी तथा डॉ० शकुन्तला कालरा ने इन कहानियों में व्याप्त सामाजिक सरोकारों को रेखांकित करते हुए उन्हें लेखिका की संवेदनशीलता और सृजनात्मकता का साक्षी बतलाया। इस कार्यक्रम में विधि भारतीय परिषद् की सन्तोष खन्ना द्वारा सम्पादित त्रैमासिक पत्रिका 'विधि भारती' के 62 अंक तथा विधि भारती परिषद् द्वारा प्रकाशित डॉ० उषा देव के कहानी-संग्रह 'अब भी लड़का नहीं' का लोकार्पण भी सम्पन्न हुआ।

सुरजीत जोबन की तीन पुस्तकें

नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में हिन्दी-पंजाबी के जाने-माने साहित्यकार सुरजीत सिंह जोबन की तीन पुस्तकों 'संत कवि गुरु गोविंद सिंह', 'भीष्म पितामह' व 'मत बैठ थक कर' का लोकार्पण मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने किया।

'भारत-भारती के सच्चे सपूत अमीर खुसरो'

नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यकम में लेखक शमशेर अहमद द्वारा लिखी पुस्तक 'भारत-भारती के सच्चे सपूत—अमीर खुसरो' का विमोचन करते हुए राज्यसभा में उपसभापति के० रहमान खान ने कहा कि हिन्दी और उर्दू के आदिकवि अमीर खुसरो का साहित्य जगत् में अतुलनीय योगदान है।

मनोरमा शुक्ल की 'अंतर्ध्वनि'

पूर्व राष्ट्रपति डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम ने राजाजी मार्ग स्थित अपने आवास पर आयोजित कार्यक्रम में कानपुर की कवयित्री मनोरमा शुक्ला की काव्य पुस्तक 'अंतर्ध्वनि' का लोकार्पण किया। उन्होंने संग्रह की कविताओं की सराहना की और इन कविताओं के अंग्रेजी अनुवाद की आवश्यकता बताई।

'युद्धरत आम आदमी' का विशेषांक

साहित्य अकादेमी के सभागार में रमणिका गुप्ता फाउण्डेशन एवं सफाई कर्मचारी आन्दोलन द्वारा आयोजित साहित्यिक समारोह में 'युद्धरत आम आदमी' के विशेषांक 'सृजन के आईने में मलमूत्र ढोता भारत' एवं 'विचार की कसौटी पर' पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। समारोह में प्रसिद्ध साहित्यकार राजेन्द्र यादव ने कहा कि हम शारीरिक एवं भौतिक मूलमूत्र ढोने से ज्यादा शास्त्रों का मलमूत्र ढो रहे हैं। अकादेमी के उपाध्यक्ष सुतिंदर सिंह नूर ने कहा कि दरअसल, शास्त्रों ने हमारे अवचेतन मन में जाति और छुआछूत को कूट-कूट कर भर दिया है, जिसे मिटाना बहुत जरूरी है। फाउण्डेशन की अध्यक्ष रमणिका गुप्ता ने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि दलित अभी भी जाति से उबरे नहीं हैं।

'श्रीमद्भागवत पीयूष'

नई दिल्ली में मुख्यमंत्री के आवास पर दिव्यमान समाज कल्याण समिति के तत्त्वावधान में साहित्यकार डॉ० जयजयराम अरुण पाल के आध्यात्मिक ग्रन्थ 'श्रीमद्भागवत पीयूष' का मुख्यमंत्री शीला दीक्षित द्वारा लोकार्पण किया गया।

संगीत के महारथियों पर पुस्तक शृंखला

नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में संगीत के महान् कलाकारों के जीवन पर आधारित प्रकाशित छह पुस्तकों की शृंखला का लोकार्पण किया गया। लोकार्पित पुस्तकें थीं—कुंदनलाल सहगल पर लिखी शरददत्त की पुस्तक, उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ पर यतीन्द्र मिश्र, नौटंकी कलाकार गुलाब बाई पर डॉ० दीप्ति प्रिया मेहरोत्रा, संगीतकार नौशाद पर चौधरी जिया इमाम, गायक मन्ना डे पर रक्षा शुक्ला और साहिर लुधियानवी पर मुरली मनोहर प्रसाद, रेखा अवस्थी और कांति मोहन द्वारा संयुक्त रूप से लिखी पुस्तक। पुस्तकों का लोकार्पण उनके लेखकों द्वारा सम्पन्न किया गया।

'टूटे रिश्तों से टूटे नहीं....'

नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश स्वर्णकांता शर्मा की पुस्तक 'टूटे रिश्तों से टूटे नहीं—अंत नहीं, जीवन की शुरुआत—अलगाव एकाकी जीवन-तलाक' को लोकार्पित करते हुए हुए कहा कि श्रीमती शर्मा की यह पुस्तक महिलाओं के लिए बनी विशेष अदालतों में कार्य करने के दौरान प्रताड़ना की शिकार महिलाओं के साथ की गई बातचीत पर आधारित एक उपयोगी पुस्तक है।

अल्हड़ बीकानेरी की याद में

गुड़गाँव। हास्य कवि स्व० अल्हड़ बीकानेरी की 74वीं जन्म जयंती के अवसर पर कार्यक्रम—'अल्हड़ बीकानेरी : यादों के साये में' आयोजित किया गया। इस अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा मुख्य अतिथि थे।

डॉ० पुष्पारानी गर्ग के ग्रन्थों का लोकार्पण

मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, इन्दौर के तत्वावधान में हिन्दी साहित्य समिति के सभागार में आयोजित समारोह में सर्वश्री कैलाशचन्द्र पन्त, प्रो० सरोजकुमार, वसन्तसिंह जौहरी, डॉ० आनन्दमंगलसिंह कुलश्रेष्ठ, डॉ० विनय राजाराम एवं नरेन्द्र दीपक द्वारा डॉ० पुष्पारानी गर्ग के सद्य: प्रकाशित ग्रन्थों 'अहल्या का रामदर्शन' (प्रबन्ध काव्य) तथा काव्य संग्रह 'शब्दगन्ध' का लोकार्पण किया गया। समिति के महामंत्री श्री अनिल ओझा ने काव्यमय आभार व्यक्त किया।

'दस मई' का विमोचन

छायाकार, चित्रकार, साहित्यकार श्री नवल जायसवाल के स्वतन्त्रता आन्दोलन पर आधारित शोधपरक ग्रन्थ 'दस मई' का विमोचन श्री ब्रजकिशोर कुठियाल, कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय और श्री सच्चिदानन्द जोशी, कुलपति कुशाभाऊ राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) द्वारा नगर के प्रबुद्ध रचनाकारों की उपस्थिति में किया गया।

भाषा समन्वय पर गोष्ठी

अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन की महाराष्ट्र शाखा द्वारा मुम्बई में राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष डॉ० मूलाराम जोशी की अध्यक्षता में 'अखिल भारतीय भाषा समन्वय' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री डॉ० मो०दि० पराडकर, डॉ० एन०वी० पाटिल, देवीदास पोटे, राजेश टैगोर, राजश्री पोतदार, रविकान्त पराडकर, राकेश सक्सेना, ऋग्वेदराजू पोतदार, श्रीमती कविता पोटे, श्रीमती सविता पोटे आदि ने भागीदारी की।

शिवराम की कविताएँ

कोटा। सुप्रसिद्ध रंगकर्मी एवं साहित्यकार शिवराम के तीन कविता संग्रहों—'माटी मुळकेगी एक दिन', 'कुछ तो हाथ गहो' व 'खुद साधो पतवार' के लोकार्पण समारोह में मुख्य अतिथि डॉ० रमाकान्त शर्मा ने कहा कि शिवराम की कविता इसलिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ये कविताएँ अपने समाज की तकलीफों और दु:ख दर्द की कविताएँ हैं और इस व्यवस्था के शोषण और दमन के शिकार हो रहे मजदूरों-किसानों के प्रति करुणा का गहरा अहसास है।

समकालीन विमर्श : निराला साहित्य

विगत दिनों निराला अध्ययन एवं शोध पीठ, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बीज वक्तव्य देते हुए बहुवचन के सम्पादक प्रो० राजेन्द्र कुमार ने कहा कि 'निराला के साहित्य में स्वाधीनता का एक अर्थ निर्भयता है। जो निर्भय नहीं है, वह स्वाधीन भी नहीं है।' अध्यक्षता करते हुए सुप्रसिद्ध आलोचक श्री दूधनाथ सिंह ने प्रो० राजेन्द्र कुमार की स्थापनाओं से असहमति व्यक्त करते हुए यह कहा कि किसी भी बड़े रचनाकार को किसी एक विचारधारा में बाँधकर नहीं देखा जाना चाहिए। निराला की कविता ही इसका प्रमाण है।

गोष्ठी के 'सत्ता विमर्श और निराला का साहित्य' केन्द्रित प्रथम सत्र का आधार व्यक्तव्य देते हुए, वरिष्ठ आलोचक प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित ने निराला साहित्य में विमर्श के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला। प्रो० अवधेश प्रधान ने अपने विस्तृत वक्तव्य में निराला की चेतना पर 1947 के महान स्वाधीनता संग्राम और बंगाल के नवजागरण के प्रभाव को रेखांकित किया।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ आलोचक प्रो० शम्भुनाथ ने सत्ता की असीमित व्याप्ति को रेखांकित करते हुए स्थापित किया कि आज हम बाहर से भले सम्पन्न हों लेकिन अन्दर से भावहीन हैं। सत्र का संचालन विभाग की वरिष्ठ अध्यापिका प्रो० शैल पाण्डेय ने किया।

'निराला साहित्य में हाशिए का समाज था', सत्र का बीज वक्तव्य देते हुए प्रखर दलित चिंतक श्री कँवल भारती ने अपने पूर्ववर्ती वक्ताओं से घोर असहमति व्यक्त की और डॉ० रामविलास शर्मा द्वारा निराला की विद्रोही या क्रान्तिकारी छवि गढ़ने को काल्पनिक बताते हुए यह कहा कि 'निराला जो नहीं हैं वह रामविलास बनाना चाहते हैं।'

डॉ० दिनेश कुशवाहा ने इस विडम्बना की ओर ध्यान आकर्षित किया कि हिन्दी में अल्पसंख्यक समाज का चित्रण दाल में नमक के बराबर है। निराला छायावाद के अकेले ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने मुसलमानों को भी रचना का विषय बनाया है। पश्चिम बंग राज्य विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० अरुण होता ने निराला को 'भारतीय चेतना' का रचनाकार बताया। अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ आलोचक प्रो० गोपेश्वर सिंह ने कहा कि निराला ने छायावादी कविता को रोमैंटिक चेतना से आगे ले जाकर स्वाधीनता संघर्ष से जोड़ा। सत्र का संचालन प्रो० मुश्ताक अली ने किया।

गोष्ठी के अन्तिम सत्र 'सस्कृति विमर्श और निराला का साहित्य' मे आधार वक्तव्य कवि और समाज-विज्ञानी डॉ० बद्रीनारायण ने प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध आलोचक प्रो० अजय तिवारी ने की।

कृत्या 2010 अन्तर्राष्ट्रीय कवितोत्सव

कृत्या 2010, अन्तर्राष्ट्रीय कवितोत्सव मैसूर में उत्सव भारतीय भाषा संस्थान के सहयोग से कृत्या के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। कृत्या

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक स्वैच्छिक संस्था है जो गत पाँच वर्षों से मासिक द्विभाषी काव्य पत्रिका के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय काव्योत्सवों का आयोजन कर रही है। कृत्या की पेशकश से नोर्वे की कम्पनी नोर्ला ने विभिन्न भारतीय भाषा के कवियों की कविताओं पर फिल्म बनाई। इस वर्ष आस्ट्रेलिया की सबसे बड़ी रेडियो अकादमी उत्सव में सुनाई गई कविताओं का प्रसारण करेगी। ऐसे वक्त में जब कि आस्ट्रेलिया जैसे देश में भारतविरोधी रवैया दिखाई दे रहा है, कृत्या की यह साहित्यिक पहल महत्त्वपूर्ण है।

कृत्या 2010 में ईरान के दो कवि मरियम अला अमजदी एवं बहजाद जरीनपुर, नोर्वे की आदवे क्लीवे, इजराइल की दिति रोनेन, आयरलैण्ड की हैलनडावेरस, वियेतनाम के नुइ चिंग त्रुग, इटली की जिंगोनिया, कोस्टारिका से ओस्वाल्दौ सोमा के साथ-साथ वियेना से पीटर आदि ई कवियों ने भाग लिया। सबसे महत्त्वपूर्ण उपस्थिति थी, एलिसिया पाटरोनी की जो अर्जेण्टीना की महत्त्वपूर्ण कवि हैं, जो निष्कासन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण लेखन कर रही हैं। कुल मिलाकर विदेश से बाइस कवि और देश से भी भारतीय भाषाओं के लगभग इतने कवियों ने भाग लिया जिनमें प्रमुख नाम हैं प्रयाग शुक्ल, तिब्बती कवि तेनसिंग, अमित कल्ला, रति सक्सेना, अग्निशेखर, दुष्यंत, निशांत और शैलेय।

कवितोत्सव का विषय था निष्कासन, पीड़ा और उससे विमुक्ति। इसमें युद्ध के प्रतिस्वरूप होने वाले विस्थापन के साथ-साथ आर्थिक विस्थापन, भाषाई और अध्यात्मिक विस्थापन को भी मुद्दा बनाया गया था।

'अनाद्यसूक्त' उद्भ्रान्त की सर्वश्रेष्ठ कृति

उद्भ्रान्त की गीत की साधना घूम-फिर कर बार-बार प्रकट होती है। उन्होंने गीत से शुरू किया था। उनके छन्दों की लय से यही पता चलता है। उनमें गहरा समकालीन बोध है मगर इसके साथ वे छन्दों की लय भी अपनी मुक्त छन्द की कविताओं में भी ले आए। 'अनाद्यसूक्त' उनकी अब तक की सर्वोत्तम कृति है जहाँ उन्होंने शब्दों के मितव्यय से बड़ी बात कहने का सफल प्रयोग किया है।

उक्त विचार शिखर आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने उद्भ्रान्त की दो पुस्तकों 'त्रेता' और 'अनाद्यसूक्त:' तथा हिन्दी के वरिष्ठ आलोचक प्रो० आनन्द प्रकाश दीक्षित द्वारा लिखित आलोचना ग्रन्थ 'त्रेता : एक अंतर्यात्रा' के लोकार्पण के अवसर पर गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान में व्यक्त किये।

शब्द स्वर और विचार लिए छह महाकवियों की मंच पर दस्तक

भारतीय साहित्य के कवि शीर्षस्थ रचनाकारों में से एक अद्वितीय लेखक कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर की यह 150वीं जयन्ती है साथ ही साहित्य मनीषियों अज्ञेय, केदारनाथ अग्रवाल, फैज अहमद फैज, शमशेर बहादुर सिंह तथा नागार्जुन का यह जन्मशती वर्ष है।

इस विशिष्ट वर्ष में इन रचनाधर्मियों पर केन्द्रित अनेक आयोजन देश भर में किये जाएँगे। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में छत्तीसगढ़ प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित इन छह महाकवियों पर एकाग्र अभिनेताओं का काव्य पाठ एक अभूतपूर्व और देश में अपनी तरह की पहली घटना कही जा सकती है। रवीन्द्रनाथ टैगोर से लेकर फैज अहमद फैज तक की चुनिंदा कविताओं को एक शृंखला में पिरोकर डेढ़ घण्टे तक प्रेक्षकों और श्रोताओं को अभिभूत कर देने का काव्य-रंग पठन कौतुक नाट्य संस्था ने सुप्रसिद्ध नाट्य निर्देशक राजकमल नायक के निर्देशन में किया। काव्य पाठ में टैगोर, अज्ञेय, नागार्जुन, केदारनाथ, शमशेर बहादुर सिंह, फैज अहमद फैज रचित 20 कविताएँ तथा 12 से अधिक कवितांशों की शृंखला प्रस्तुत की गई।

बुन्देल खण्ड की धरती के सौन्दर्य के बेजोड़ चितेरे कवि थे जन कवि केदार

केदार शोध पीठ न्यास एवं प्रगतिशील लेखक संघ बांदा इकाई के तत्वावधान में जन कवि केदारनाथ अग्रवाल के सौवें जन्मदिन के अवसर पर जन कवि केदार के शताब्दी वर्ष की शुरुआत की गयी। कार्यक्रम की अध्यक्षता जे०एन० कालेज के प्रधानाचार्य डॉ० नंदलाल शुक्ल ने की। मौदहा पी०जी० कालेज के प्राचार्य डॉ० रामगोपाल गुप्त ने कहा केदार की कविताओं की उदात्तता उन्मुक्तता सौन्दर्य की अप्रतिमता, जीवन के रंगों की विविध छवियाँ जो उनके बीस वर्ष के जीवन तक रच-बस गयी थी, उसमें ही उनके कृतित्व का सब कुछ निहित था बाकी जो जीवन भर जो लिखा वह उसी का विस्तार था।

वे इंसानियत की तमीज़ के गीतकार थे

चढ़ती गर्मियों के दिन। मध्यप्रदेश के मालवा अंचल के शहर देवास के वास्ते तो ये गीतिमय दिन थे। शहर के जिन प्रमुख रास्तों से लोग गुजरते, स्व० कवि नईम के गीतों-ग़ज़लों के पोस्टर होर्डिंग्स से रूबरू होते, जहाँ लिखा था— *चौतरफ़ फ़ैली फ़सीलें, दर बनाना चाहिए/अब मकानों की जगह कुछ घर बनाना चाहिए/जोड़ दे जो आज टूटे सेतु सारे नेह के/शब्द लिपि ही क्यों, नए अक्षर बनाना चाहिए।*

गुज़िश्ता 9 अप्रैल 2009 को गीतकार और काष्ठकला शिल्पी नईम दुनिया-ए-फ़ानी को अलविदा कह गए। गीतों में कबीर सिफ़त कहन से नईम ने मुल्क की चेतना को हिलाकर रख दिया था। उनके दोस्तों, आत्मीयों, शार्गिदों बुद्धिजीवियों और बतौरे-खास उनकी विदुषी पुत्री डॉ० समीरा नईम ने मिलजुलकर नईम की यादगार का यह आयोजन देवास में किया। इस दिन देवास के मल्हार स्मृति मन्दिर के सभागार में 'नईम स्मरण' के तहत लकड़ी से तराशी नईम की 27 काष्ठ कलाकृतियों की प्रदर्शनी का उद्घाटन देवास के सांसद सज्जन सिंह वर्मा ने किया।

दूसरे सत्र में नईम की जीवन-संगिनी श्रीमती सुल्ताना नईम और वरिष्ठ आलोचक डॉ० विजयबहादुर सिंह (सम्पादक 'वागर्थ', कोलकाता) ने भारतीय ज्ञानपीठ से सद्य प्रकाशित नईम ने नये गीत संग्रह 'उजाड़ में परिन्दे' (126 गीत) और नईम के पुराने दोस्त वरिष्ठ गीतकार प्रो० उदयप्रताप सिंह ने नईम के ग़ज़ल संकलन 'आदम कद नहीं रहे लोग' (79 ग़ज़लें, मेधा बुक्स, दिल्ली) का लोकार्पण किया।

नईम के गीतितत्त्व पर डॉ० विजयबहादुर सिंह ने कहा कि नईम के गीत आदमी में इन्सान होने की कोशिश के गीत हैं, बल्कि साहित्य में इन्सानियत की तमीज़ के गीत हैं।

तीसरे सत्र में आयोजित काव्य गोष्ठी का संचालन मशहूर गीतकार यश मालवीय (इलाहाबाद) ने किया। उन्होंने नईम केन्द्रित आत्मीय कविता 'नईम को देखे बहुत दिन हो गए' पढ़ी और एक गीत पेश किया—'चिट्ठियों में, लकड़ियों में, गीत में जागे हुए हो/कौन कहता है कि दुनिया से कहीं भागे हुए हो'।

भारत भवन में कवि-भारती

भारत भवन में भारतीय कविता पर केन्द्रित समारोह कवि भारती आयोजित किया गया। यह पाँचवा समारोह था। उल्लेखनीय है कि कवि भारती की शुरुआत वर्ष 1987 में हुई। कविता पर केन्द्रित इस प्रतिष्ठापूर्ण समारोह में भारतीय भाषाओं के अनेक शीर्षस्थ कवि भागीदारी कर चुके हैं। समारोह में कवियों द्वारा मूल भाषा में काव्यपाठ के साथ-साथ हिन्दी और अंग्रेजी में कविताओं के अनुवाद भी प्रस्तुत किए जाते हैं। शुभारम्भ आलोचक-सम्पादक डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय ने किया।

कवि भारती के इस पाँचवे समारोह में जिन कवियों ने काव्य पाठ किया उनमें कुट्टि रेवथी (तमिल), हेमन्त दिवाते (मराठी), जयन्त परमार (उर्दू), संजय कुंदन (हिन्दी), पी०पी० रामचन्द्रन (मलयालम), हितेन आनंदपरा (गुजराती), एकराम अली (बाँग्ला), देवनीत (पंजाबी), अंकुर बेटागेरि (अंग्रेजी), रामकुमार तिवारी (हिन्दी), चंद्रभान खयाल (उर्दू), डी० राममूर्ति (तेलुगू), सचिन केतकर (मराठी), केदार मिश्र (उड़िया), एस० मंजुनाथ (कन्नड़), अनिरुद्ध उमट (हिन्दी), एस० जोसेफ (मलयालम), मुकेश जोशी (गुजराती), नीरू असीम (पंजाबी), सौख सैकिया (असमी), सैफ़ी शौक़ (कश्मीरी), व्योमेश शुक्ल (हिन्दी), अरुन्धती सुब्रह्मण्यम

(अंग्रेजी), विष्णु महापात्र (उड़ियन), सी० रवीन्द्रनाथ (कन्नड़), अनुराधा महापात्र (बाँग्ला), शाहजहाँ बेगम (तेलुगू) शामिल हैं। समारोह में 'भूमण्डलीकरण और कविता की चुनौतियाँ' तथा 'समाज के हाशिए और भारतीय कविता' विषय पर आमन्त्रित कवियों द्वारा विचार-विमर्श भी किया गया।

श्री कैलाशचन्द्र पन्त के अमृत वर्ष पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

भोपाल 17 जून। वरिष्ठ साहित्यकार पत्रकार एवं चिंतक श्री कैलाशचन्द्र पन्त के अमृत वर्ष के अन्तर्गत आगामी 24 जुलाई 2010 को सुबह 10 बजे दिल्ली के गांधी शान्ति प्रतिष्ठान में अभिनन्दन समारोह एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, दिल्ली और दादा श्री कैलाशचन्द्र पन्त अमृत महोत्सव समिति, भोपाल के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित होने वाली इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय 'भारत बनाम इंडिया : समुस्थित चुनौतियाँ' निर्धारित किया गया है। पूर्व राज्यपाल श्री टी०एन० चतुर्वेदी इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे, जबकि प्रख्यात विचारक श्री के०एन० गोविन्दाचार्य मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान देंगे।

पं० माधवराव सप्रेजी की 139वीं जयंती 'हिन्दी दास बोध के 100 वर्ष'

रायपुर, 19 जून 2010। माधवराव सप्रे राष्ट्रवादी पत्रकारिता शोधपीठ, पं० माधवराव सप्रे साहित्य केन्द्र और रायपुर प्रेस क्लब के तत्त्वावधान में महान राष्ट्रवादी सम्पादक एवं हिन्दी सेवी पं० माधवराव सप्रेजी की 139वीं जयन्ती पर रायपुर प्रेस क्लब में समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 'हिन्दी दास बोध के 100 वर्ष' पर विचार गोष्ठी आयोजित की गई। श्री समर्थ रामदास स्वामी की सत्रहवीं सदी में रचित कालजयी कृति 'दासबोध' के विविध पक्षों पर विद्वान वक्ताओं ने विस्तार से विवेचना की।

पं० माधवराव सप्रे साहित्य शोध केन्द्र के अध्यक्ष एवं पं० सप्रेजी के पौत्र डॉ० अशोक सप्रे ने पं० सप्रेजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षिप्त चर्चा की।

कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति सच्चिदानंद जोशी ने विचार गोष्ठी का विषय प्रवर्तन किया। उन्होंने कहा कि सप्रेजी के अवदान को कारावास के पहले, कारावास के दौरान और कारावास के बाद के कालखण्डों में मनन करना होगा। कारावास के पहले सप्रेजी का राजनीतिक और राष्ट्रवादी जीवन। कारावास और विषम परिस्थितियों में अंग्रेजों से क्षमा याचना के तत्काल बाद कठोर तपस्वी जीवन। सप्रेजी ने अपने गुरु परांजपेय जी की प्रेरणा से 'दासबोध' का अध्ययन और फिर मराठी से हिन्दी में अनुवाद किया। इसके बाद जब सप्रेजी ने दुबारा सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया तो उन्होंने आध्यात्मिक धारा से प्रेरित जीवन जिया। 'दासबोध' एक तरह से सप्रेजी के जीवन के उत्तरार्ध को बनाने वाला ग्रन्थ है। 'दासबोध' हमें सिखाता है कि पार्श्व में रहकर भी समाज को दिशा दी जा सकती है। आज के सन्दर्भ में भी आधुनिक प्रबन्धन 'दासबोध' का जीवन दर्शन और अध्ययन प्रभावी है। यह 'दासबोध' की प्रमाणिकता और कालजयिता है कि कई अग्रणी विश्वविद्यालय और प्रबन्धन संस्थानों में इसके अध्ययन पर आधुनिक परिदृश्यों में व्याख्या की गई है।

'समावर्तन' के विशेषांक का लोकार्पण

29 मई को मुंबई में साहित्यिक पत्रिका 'कुतुबनुमा' के तत्त्वावधान में वरिष्ठ पत्रकार श्री नन्दकिशोर नौटियाल के पत्रकारिता में योगदान पर प्रकाशित 'समावर्तन' के विशेषांक का लोकार्पण हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के सभागृह में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उज्जैन से प्रकाशित 'समावर्तन' के सम्पादक प्रो० प्रभात कुमार भट्टाचार्य का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार श्री विश्वनाथ सचदेव की अध्यक्षता में मुंबई विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के रीडर डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की मानद निदेशक डॉ० सुशीला गुप्ता तथा श्री राजू पटेल मुख्य वक्ता के रूप में मंचासीन थे।

सम्मान समारोह व 'शब्दयोग' के विशेषांक का लोकार्पण

28 मई को मुंबई में हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के सभागार में सुप्रसिद्ध लेखक-कार्टूनिस्ट श्री आबिद सुरती के 75वें जन्मदिवस पर एक संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें 'शब्दयोग' पत्रिका द्वारा उन पर केन्द्रित एक विशेषांक का लोकार्पण भी सम्पन्न हुआ। 'योगदान' के सचिव श्री आर०के० अग्रवाल ने श्री आबिद सुरती की 'पानी बचाओ' मुहिम के लिए 10 हजार रुपए का चेक भेंट किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में अभिनेत्री एडीना वाडीवाला ने श्री आर०के० पालीवाल की श्री आबिद सुरती पर लिखी लम्बी कविता 'आबिद और मैं' का पाठ किया। सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार स्व० शरद जोशी की एक चर्चित रचना 'मैं, आबिद और ब्लैकआउट' का पाठ उनकी सुपुत्री नेहा शरद ने किया। आयोजन में श्री आबिद सुरती सहित उनके कई प्रशंसक एवं मुंबई साहित्य-जगत् से अनेकानेक विद्वान व साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

'नारी अस्मिता और कृष्णा सोबती'

विगत दिनों अरुण मुकिम की पुस्तक 'नारी अस्मिता और कृष्णा सोबती' का लोकार्पण जाने-माने फिल्मकार श्री महेश भट्ट ने किया। कवि श्री कुँवर बेचैन ने पुस्तक परिचय दिया। कार्यक्रम के अन्त में लेखिका ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी पुस्तक रिसर्च वर्क पर आधारित है।

साहित्यिक पत्रकारिता दिवस समारोह सम्पन्न

3 जून को गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान सभागार, नई दिल्ली में 8वाँ साहित्यिक पत्रकारिता दिवस समारोह मनाया गया। आयोजन यू०एस०एम० पत्रिका, होरी पत्रिका और राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास द्वारा किया गया था। समारोह में 'साहित्यिक पत्रकारिता के राष्ट्रीय सामाजिक महत्त्व : वर्तमान स्थिति' तथा 'राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का स्वाभिमान' विषय पर वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

एकल काव्यपाठ सम्पन्न

28 मई को हिन्दी भवन, नई दिल्ली में पं० गोपालप्रसाद व्यास की पुण्यतिथि पर 'काव्ययात्रा : कवि के मुख से' कार्यक्रम के अन्तर्गत पद्मभूषण श्री गोपालदास 'नीरज' का एकल काव्यपाठ सम्पन्न हुआ।

अखिल विश्व हिन्दी समिति का कार्यक्रम

12 जून को अखिल विश्व हिन्दी समिति का उद्घाटन समारोह हिन्दू सांस्कृतिक केन्द्र, मिस्सिसौगा रोड, ओंटारियो, कनाडा में सम्पन्न हुआ। मंच संचालन सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती भुवनेश्वरी पाण्डे ने किया। सभापति थे डॉ० दाऊजी गुप्त। अध्यक्ष श्री गोपाल बघेल 'मधु' ने परिचय कराया। समिति के न्यूयॉर्क के अध्यक्ष डॉ० विजयकुमार मेहता ने 'विज्ञान तकनीक व हिन्दी की उपलब्धियाँ व भविष्य' विषय पर विचार व्यक्त किए।

मन्नू भण्डारी के 'महाभोज' नाटक के कन्नड़ अनुवाद का लोकार्पण

हिन्दी की प्रख्यात लेखिका श्रीमती मन्नू भण्डारी के बहुचर्चित नाटक 'महाभोज' का कन्नड़ अनुवाद 'सत्तवन सुत्ता' नाम से हिन्दी और कन्नड़ के लेखक एवं दोनों भाषाओं के वरिष्ठ अनुवादक प्रोफेसर तिप्पेस्वामी ने किया है। इस अनूदित नाट्य कृति का लोकार्पण समारोह मैसूर नगर में 6 जून 2010 को कर्नाटक के रंग मण्डल 'रंगायण' के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। 'रंगायण' के निदेशक एवं ख्यात नाटककार प्रो० लिंगदेवरू होमने ने 'सत्तवन सुत्ता' का लोकार्पण करते हुए कहा कि 'महाभोज' का यह कन्नड़ रूपान्तर एक सशक्त राजनैतिक नाटक है जिसमें मूल लेखिका मन्नू भण्डारी ने स्वातंत्र्योत्तर भारत के राजनैतिक खेलों और खिलाड़ियों के असली रूपों का पर्दाफाश किया है। इस नाटक का बढ़िया कन्नड़ अनुवाद प्रो० तिप्पेस्वामी ने प्रस्तुत किया है।

पुस्तक परिचय

खिली हुई धूप में
(काव्य-समग्र)

विवेकी राय

प्रथम संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 352

सजि. : रु० 300.00 ISBN : 978-81-7124-739-4
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रख्यात साहित्यकार डॉ० विवेकी राय के कुल पाँच कविता-संग्रहों का समग्र रूप में प्रकाशन एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति का प्रयास है। गँवई जीवन के कुशल प्रस्तोता डॉ० राय ने अपनी कविताओं के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर भारतीय ग्राम-जीवन के क्षण-क्षण बदलते स्वरूप को विभिन्न कोणों से उभारा है। आपकी कविताओं में 'आँखिन देखी' की अभिव्यक्ति हुई है। यही कारण है कि ये कविताएँ यथार्थ के ऊबड़-खाबड़ व खुरदुरे धरातल पर खरी-खरी कहने का साहस रखती हैं। अनुभूतियों की गहनता और अभिव्यक्ति की ताजगी इन कविताओं को मूल्यवान बनाती है। मनमोहक प्रकृति-चित्रांकन के बीच प्रतीक योजना हो या बिम्ब विधान, सहजता हो या सरसता, सब कुछ आश्वस्तकारी व अनुरंजक है। वे कथाकार और निबन्धकार के रूप में हिन्दी साहित्य में अपनी एक प्रतिष्ठ पहचान बना चुके हैं। इस समग्र से उनके समृद्ध कवि-रूप से भी हिन्दी जगत यथावत रूप में परिचित हो सकेगा।

''विवेकी राय की कविताओं में भावुक कवि के प्राणों का निखार है। उनके गीतों में उसके हृदय की समवेदना की झंकारें हैं। गीत-प्रधान रचनाओं की भाषा अत्यन्त मधुर, प्रवाहपूर्ण तथा कवि के हृदय की भावनाओं के सौन्दर्य से ओत-प्रोत है।'' **—सुमित्रानंदन पंत**

''विवेकी राय की कविताओं के पद्य मुझे पसन्द आये इनमें बड़ा सुन्दर प्रवाह है और भावनाओं में बड़ी सुन्दर आशावादिता। आपने प्रकृति के उपकरणों का भी बड़ा अच्छा प्रयोग किया है। मुझे प्रतीत होता है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के स्वच्छन्दतावादी कवित्तों के बाद इस प्रकार के कवित्त मुझे पहली बार देखने को मिले हैं।'' **—नन्ददुलारे वाजपेयी**

संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशात्र

महामहोपाध्याय

प्रो० अभिराज राजेन्द्रमिश्र

प्रथम संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 480

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 978-81-7124-737-0
अजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-738-7
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र शीर्षक यह ग्रन्थ मेरे द्वारा अनेक लेखकीय दायित्वों के साथ प्रणीत किया गया है। लेखकीय दायित्व का अभिप्राय है किसी भी ग्रन्थ में विद्यमान परम्परानपेक्षी, अभिनव प्रस्थानात्मक, स्वत: उत्प्रेक्षित विचारों अथवा सिद्धान्तों के लिए लेखक का जिम्मेदार होना। प्रस्तुत ग्रन्थ में ऐसे अनेक विचार, प्रमेय, व्याख्यान अथवा संस्थापन हैं जो पारम्परिक नहीं हैं, जो इदम्प्रथमतया स्थापित एवं व्याख्यात हो रहे हैं। मैं उन विचारों एवं सिद्धान्तों का जिम्मेदार हूँ।

संस्कृत काव्यशास्त्र के पूर्व लेखकों सर्वश्री पी०वी० काणे, एस०के० डे, जी०टी० देशपाण्डे, पं० बलदेव उपाध्याय आदि में प्राय: काव्यशास्त्र के विवेच्य विषय को लेकर पूर्ण एकरूपता है, विचारों एवं व्याख्यानों में भले ही अन्तर हो। उस दृष्टि से, प्रस्तुत ग्रन्थ में अनेक नवीनतायें हैं, जिन्हें यहाँ रेखांकित करना आवश्यक है।

प्रथम बिन्दु : यह काव्यशास्त्र वैदिक मन्त्रों से आज तक की संस्कृत कविता का नियमन, व्याख्यान एवं समीक्षा करता है। फलत: इसकी अभिव्याप्ति पूर्व काव्यशास्त्रों की तुलना में कहीं अधिक है। संस्कृत काव्यशास्त्र का वैदिक उद्भव, पूर्वभरतयुगीन संस्कृत काव्यशास्त्र, भरतयुगीन काव्यशास्त्र, अर्वाचीन संस्कृत काव्यशास्त्र के विवेच्य विषय, पण्डितराजोत्तर संस्कृत काव्यशास्त्र तथा स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत-कविता (गीत, गज़ल एवं छन्दोमुक्त) की समीक्षा का मानदण्ड आदि सामग्री इस काव्यशास्त्र में इदम्प्रथमतया समाविष्ट की गई है।

द्वितीय बिन्दु : इस काव्यशास्त्र में काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्य-लक्षण, काव्य-विभाजन, अभिधादि शब्द-शक्तियाँ, गुणालंकार, रीति-वृत्ति तथा काव्यात्मतत्त्व आदि समस्त सन्दर्भों में, भरत से पण्डितराज जगन्नाथ तक उपलब्ध मत-मतान्तरों की क्रमिक समीक्षा करने के बाद ही, उनकी वर्तमान स्थिति पर विचार किया गया है। फलत: पाठक को ऐतिहासिक-समीक्षा का सुख मिलता है।

तृतीय बिन्दु : इस काव्यशास्त्र में श्रद्धा एवं कोरे तर्क के बीच का विवेकसम्मत मार्ग अपनाया गया है। अतिशय श्रद्धा दोष नहीं देखने देती तो कोरे तर्क गुणों तक नहीं पहुँचने देते। फलत: समीक्षा पक्षपातपूर्ण बन जाती है। परन्तु इस काव्यशास्त्र में दोनों ध्रुवों से मुक्त रहकर, मध्यम-मार्ग अपनाया गया है जो सत्य के प्रकाशन का है।

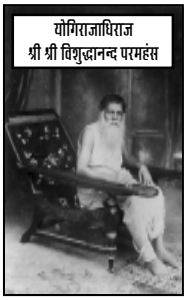

योगिराजाधिराज श्री श्री विशुद्धानन्द परमहंस

लेखक

अक्षयकुमार दत्त गुप्त कविरत्न

अनुवादक

एस० एन० खण्डेलवाल

प्रथम संस्करण : 2010 ई० पृष्ठ : 396

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 978-81-7124-753-0
अजि. : रु० 225.00 ISBN : 978-81-7124-754-7
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

महान् साधक रायबहादुर अक्षयकुमारदत्त गुप्त प्रणीत 'योगिराजाधिराज श्री श्री विशुद्धानन्द परमहंसदेव' का भाषानुवाद प्रस्तुत है। यद्यपि पहले भी इन महायोगी की जीवनगाथा प्रकाशित हो चुकी है तथापि उनके जीवन के अनछुए प्रसंगों का तथा उनकी जीवन-यात्रा के सामान्य क्षणों का जो हृदयस्पर्शी विवरण इस ग्रन्थ में है, उसका वैसा स्वरूप अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होता। महान् लोगों के जीवन की एक छोटी से छोटी घटना भी जनसामान्य के लिए पथप्रदीप का कार्य करती है। दिशाहारा व्यक्ति उसी से अपना मार्ग प्रशस्त कर लेता है। जैसे प्रकाश की एक सामान्य किरण भी वर्षों के छाये गहनान्धकार को क्षणार्ध में विदूरित करने में समर्थ रहती है, वैसे ही महापुरुष के जीवन की एक क्षुद्रतम घटना भी व्यर्थ नहीं होती तथा उससे भी मानव के हितार्थ सन्देश प्रसारित होता रहता है। यह निर्विवाद है।

यह ग्रन्थ एक दैनन्दिनी (डायरी) के समान है। महापुरुष की नित्यप्रति की घटनाएँ इसमें सँजोई गयी हैं। वर्णन-शैली रोचक तथा भावपूर्ण है। यह निश्छल-निष्कपट भाव का तथा भक्तिपूर्ण हृदय का उद्‌गार है। इसलिए यह सार्वजनीन है, क्योंकि इस प्रकार के भाव सबके अन्तरतम का स्पर्श करते हैं, पाठक का संवेग भी लेखक के भाव में भावित तथा आकारित हो जाता है। यही यथार्थ जीवनी की, 'चरितकथा' की कसौटी है।

आशा है इस ग्रन्थ के भाषानुवाद के प्रकाशन से कर्म मार्ग का अनुसरण करने वाले साधकों का प्रभूत लाभ होगा।

पदुमावती
(मूल पाठ तथा साहित्यिक व्याख्या)

सम्पादक एवं व्याख्याकार
डॉ० कन्हैया सिंह

प्रथम संस्करण : 2010 ई०
पृष्ठ : 560

सजि. : रु० 500.00 ISBN : 978-81-7124-727-1
अजि. : रु० 275.00 ISBN : 978-81-7124-728-8
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मलिक मुहम्मद जायसी सूफी काव्य-परम्परा के सबसे प्राणवान महाकवि हैं और उनकी रचना 'पदुमावति' (अब तक 'पदमावत' नाम से संबोधित) भाव और विचार की एक ऐसी पूँजी है जो काव्य-कला के चरमोत्कर्ष के साथ ही भारत की राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता की एक मिसाल है। इसी से जायसी को 'धरती पुत्र' और 'राष्ट्र का महान सपूत' कहा गया है। पर जायसी की इस महान कृति का पाठ विद्वानों के महत्त्वपूर्ण अनुसंधानों की महान उपलब्धियों के बाद भी कई सौ स्थलों पर संदिग्ध और विवादास्पद बना रहा। प्रस्तुत संपादन में उन सभी स्थलों के सही पाठ को ढूँढ़ निकाला गया है और रचना के गूढ़ अर्थ की सही साहित्यिक व्याख्या भी 'सोना में सोहागा' जैसी की गयी है।

संपादक डॉ० कन्हैया सिंह हिन्दी जगत् के एक ऐसे हस्ताक्षर हैं जो सूफ़ी काव्य और दर्शन के मर्मज्ञ तथा पाठालोचन की शास्त्रीय विधि के मान्य आचार्य हैं। उनकी इस योग्यता को डॉ० माता प्रसाद गुप्त, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल तथा डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त जैसे इस क्षेत्र के पण्डितों ने भी स्वीकार किया है। ऐसे सुयोग्य और अधिकारी व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत यह नया पाठ और नयी साहित्यिक व्याख्या अवश्य ही हिन्दी साहित्य की एक महान उपलब्धि होगी।

डॉ० सिंह ने यह कार्य डॉ० भगवती प्रसाद सिंह के कुशल निर्देशन में सम्पन्न किया था। उनके संग्रह की चार महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियों के साथ डॉ० माता प्रसाद गुप्त संस्करण के पाठान्तरों तथा मनेर शरीफ आदि की प्रतियों से परिश्रमपूर्वक यह पाठ संपादित किया गया है तथा अवधी-भाषा के व्याकरण और उच्चारण-वैशिष्ट्य को भी इसमें प्रामाणिकता के आधार पर सुरक्षित किया है। जहाँ तक साहित्यिक व्याख्या का प्रश्न है, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के भाष्य की अनेक भूलों को इसमें सुधारा गया है। डॉ० अग्रवाल की व्याख्या इतिहास-संस्कृति के तत्त्वानुसंधान में बेजोड़ है, पर सूफी काव्य की बारीकियों और लोकभाषा के शब्दों और साहित्यिक अर्थों की पकड़ में जो अधूरापन था, उसे इस व्याख्या ने पूर्ण कर दिया है।

इस नये पाठ और अर्थ ने मलिक मुहम्मद जायसी के काव्यानुसंधान, उनके धर्म-दर्शन और राष्ट्रीय दृष्टिकोण के सम्बन्ध में सर्वांगपूर्ण और संगत अनुशीलन और विमर्श का मार्ग प्रशस्त किया है। विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, सूफी काव्य के अध्येताओं और विद्यार्थियों के लिए यह कृति संग्रहणीय है।

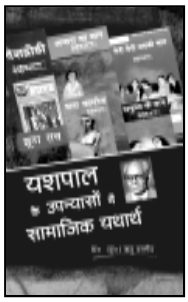

यशपाल के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ

डा (कु०) ऋतु वार्ष्णेय

प्रथम संस्करण : 2010 ई०
पृष्ठ : 256

सजि. : रु० 300.00 ISBN : 978-81-7124-755-4
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

लेखिका ने आधुनिक-युग में परिवर्तित अथवा परिवर्तमान-परिवेश में यथार्थ को दृष्टि में रखते हुए यशपाल की सृजन-यात्रा को प्रस्तुत पुस्तक में उकेरा है। उन्होंने 'दादा-कामरेड', 'देश-द्रोही', 'पार्टी-कामरेड', 'मनुष्य के रूप', 'भूखा-सच' और 'मेरी-तेरी उसकी बात' जैसे यशपाल के राजनीतिक उपन्यासों का परिचय देते हुए उनमें अनुस्यूत सामाजिक-यथार्थ का सुष्ठु और प्रशंसनीय अंकन किया है। 'दिव्या', 'अमिता' और 'अप्सरा का श्राप' प्रभृति यशपाल के ऐतिहासिक-उपन्यासों में निहित ऐतिहासिक-यथार्थ का अत्यन्त ही सुन्दर गम्भीर विद्वत्ता-पूर्ण आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने में डा० ऋतु वार्ष्णेय पूर्ण सफल रही हैं।

श्रीसाधना

म.म. पं० गोपीनाथ कविराज

पंचम संस्करण : 2010 ई०
पृष्ठ : 136

अजि. : रु० 50.00 ISBN : 978-81-7124-743-1
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

श्रद्धेय महामहोपाध्याय डॉक्टर गोपीनाथ कविराज एक असाधारण व्यक्ति थे। वे अपने में ही एक विभूति और संस्था थे। कविराजजी ने अपने जीवन में सैकड़ों लेख लिखे। उनमें से कुछ अब भी अप्रकाशित हैं। इस संग्रह में प्रकाशित प्रत्येक लेख एक अमूल्य रत्न है। उदाहरणार्थ 'श्रीचक्र' शीर्षक लेख में कविराजजी ने विश्वसृष्टि के विषय में, तंत्र की जो मार्मिक दृष्टि है, उसका मनोरम चित्रण किया है। ऐसे ही 'प्रेमसाधना' शीर्षक लेख में कविराजजी ने कुछ तथ्य ऐसे दिए हैं जिनसे उनकी मौलिकता सिद्ध होती है।

भोजपुरी लोकगीत

डॉ० अवधेश कुमार सिंह

प्रथम संस्करण : 2010 ई०
पृष्ठ : 108

सजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-7124-742-4
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

लोकगीतों का विषय शृंगार, प्रेम, संयोग-वियोग या प्रकृति-वर्णन तक सीमित नहीं रहा है। आधुनिक युग में सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ स्वाधीनता आन्दोलन तथा असहयोग-आन्दोलन के अतिरिक्त देश की स्वाधीनता के बाद मानव-जीवन में आने वाले परिवर्तनों को भी इसकी व्यापक परिधि में समेटने का प्रयास किया गया है, इस प्रकार लोकगीत या लोक-साहित्य में मानवीय मूल्यों की सहज और अकृत्रिम अभिव्यक्ति मिलती है। नि:सन्देह ऐसी अभिव्यक्ति बोलचाल की भाषा में होने के कारण अधिक आत्मीय, अधिक अपनापन लिये हुए और अधिक जानी-पहचानी लगती है, इसकी संवेदनशीलता का तो कहना ही क्या!

प्रत्येक क्षेत्रीय भाषा या बोली में ऐसे गीत पाये जाते हैं, जो परम्परा से लोककण्ठ में समाये हुए हैं और जिनका गायन विभिन्न लोकाचारों, उत्सवों, ऋतुओं के अनुसार जनसामान्य करता है। इन गीतों को ही 'लोकगीत' की संज्ञा दी जाती है। इनकी रचना काव्यशास्त्र के नियमों के अनुसार नहीं होती और न तो इनमें काव्यगुणों को विशेष महत्त्व दिया जाता है। इनमें वैदिक व्यवहार की भाषा में लय-सुर का समावेश होता है। सामान्य जीवन में सुख-दु:ख, आशा-निराशा और उत्साह का वर्णन होता है।

अन्य लोकभाषाओं की तरह भोजपुरी में भी लोकगीतों की एक समृद्ध परम्परा है। ये लोकगीत विभिन्न अवसरों पर गाये जाते हैं। तमाम भोजपुरी अंचल से एकत्र किए गए विविध अवसरों पर गाये जाने वाले लोकगीतों का यह अनूठा संकलन निश्चित रूप में न केवल भोजपुरी साहित्य के अध्ययनकर्ताओं बल्कि भोजपुरी अंचल से जुड़े समस्त जनों के लिए अत्यन्त ही उपयोगी एवं संग्रहणीय सिद्ध होगा।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

लेख लिखे माटी ने (गीत-संग्रह), देवेन्द्र सफल, दीक्षा प्रकाशन, 117/क्यू/759-ए शारदा नगर कानपुर-208025, संस्करण : 2010, मूल्य 150/-रु० मात्र

× × × कविता अपनी अभिव्यक्ति के धरातल पर अंतर्लय की गेयता लिये हुए गीत बन जाती है। हिन्दी साहित्य में यह गीत-यात्रा नयी नहीं है। प्रत्येक युग और समय ने गीत की संरचना में परिवर्तन किये हैं। वर्तमान के गीत ज़िन्दगी की तेज-रफ्तार विसंगतियों के बीच संवेग-संकुल मन की रागात्मक-आस्था की अभिव्यंजना है। प्रस्तुत संग्रह का कवि-मन भी उसी प्रक्रिया से गुज़र रहा है × × × 'शब्दों का सम्मोहन टूटा/अक्षर-अक्षर चुगली करते/सहती जीभ दाँत की घातें/बैठी सिर धुनती मर्यादा/कन्धे झुकने लगे हमारे/थोड़ा लिखा समझना ज़्यादा।'

आत्म निवेदन (कविता-संग्रह), डॉ० इंदरराज वैद, हिन्दी प्रचार प्रेस, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, त्यागराय नगर, चेन्नई-600061, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 60/- रु० मात्र

× × × मानवीय आस्था और विश्वास की रचनाएँ हैं 'आत्म-निवेदन'। जीवन और जगत से अंतर्सम्बन्ध रूपायित होकर फूटा है इस काव्य-स्रोत में। यहाँ राग है, विराग है, स्नेह है, संवेदना है, आक्रोश है, ललकार है × × 'समता के प्यालों में जब तक गरल विषमता का होगा/शब्द-शब्द में कवि के तब तक शोले भरे रहेंगे।'

हस्ताक्षर समय के, (निबन्ध-संग्रह) लेखक : डॉ० सत्येन्द्र चतुर्वेदी, सम्पादक : नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', रचना प्रकाशन, 57, नाटाणी भवन, मिश्र राजा जी का रास्ता, चाँद पोल बाजार, जयपुर-302001 संस्करण : 2009, मूल्य : 300/- रु० मात्र

× × × वैश्वक-बाज़ार की व्यावसायिकता और उपभोक्तावाद के दोहरे दबाव से पतनोन्मुख समाज को सर्वनाश से बचाने का आग्रह लिये आज भी जीवंत है मिशनरी-पत्रकारिता। जयपुर से प्रकाशित 'लोक शिक्षक मासिक' के सम्पादक डॉ० सत्येन्द्र चतुर्वेदी के द्वारा लिखे गये मूल्य-परक, सांस्कृतिक गवेषणाओं से युक्त अग्रलेखों, टिप्पणियों से चुने हुए कुछ लेख इस संग्रह में प्रकाशित हैं। आज के अपसांस्कृतिक-आघातों, मूल्यहीन राजनैतिक कदाचारों, व्यावसायिक-प्रलोभनों, आपराधिक-मानसिकताओं आदि के बीच आस्था का यह ज्योतिवृत्त है जो मनुष्य की प्रेरणा और संबल बन सकता है।

जीवन, मृत्यु, आध्यात्म, सन्तोष केजरीवाल, प्रकाशक : श्री राजकुमार केजरीवाल, प्लाट नं० 14/15, जगन्नाथपुरी कालोनी, महमूरगंज रोड, रथयात्रा, वाराणसी-221010, संस्करण : 2010, सहयोग राशि : 100/-रु० मात्र

× × × जीवन, मृत्यु, आध्यात्म को जानकर हमें कैसे जीना चाहिए? इस प्रश्न का अलग-अलग शीर्षकों के अन्तर्गत सूत्ररूप में विश्लेषण करते हुए लेखक ने सारवत् सारी स्थापनाएँ प्रस्तुत की हैं; जो चिन्तनपरक एवं मननीय हैं।

वर्तमान साहित्य : (जून 2010), सम्पादक : नमिता सिंह, 28, एम०आई०जी०, अवन्तिका-1, रामघाट रोड, अलीगढ़-202001

कला समय : (फरवरी-मार्च 2010), सम्पादक : विनय उपाध्याय, एम०एक्स०-135, ई-7, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016

अक्षर पर्व : (मई 2010), सम्पादक : सर्वमित्रा सुरजन, देशबन्धु कार्यालय, 506 आईएनएस बिल्डिंग, 9 रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001

संवेद : (अंक 13/14, संयुक्तांक 2010), सम्पादन : कमला प्रसाद मिश्र, 'किताबवाला' 205, शिवानी, दौलतनगर, रोड नं० 9, बोरीवली (पूर्व), मुम्बई-66

नव निकष : (मई 2010), सम्पादक : गिरधर शर्मा, ज्ञानोदय प्रकाशन, 6-7 जी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, पी-रोड, कानपुर

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 11 **जुलाई 2010** **अंक : 7**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2009-11 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-005/2009-2011

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**